तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 10, अंक- 1, दिसंबर 2021 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

अवसर सबको दे रही, हरियाणा सरकार
सुपर-सौ में पा जगह, कर लो नैया पार

हमें विद्या धन देना

हे सरस्वती माता, बस इतनी दया करना ।
आए हैं शरण तेरी, हमें विद्या धन देना।

आकर के बैठना तुम, जिह्वा हमारी पर ।
नहीं दूर कभी होना, वाणी में विराज रहो ।
बोलें अमृतवाणी, ऐसा हमें स्वर देना ।
हे सरस्वती माता, बस...
आए हैं शरण तेरी...

अज्ञानता दूर करो, तुम ज्ञान बढ़ा देना।
अंधकार को दूर करो, उजियारा कर देना।
बन जाएँ ज्ञानी हम, माँ ऐसा वर देना ।
हे सरस्वती माता, बस...
आए हैं शरण तेरी...

साहस और हिम्मत को, जीवन में भर देना ।
घबराएँ कभी भी नहीं, निर्भीक बना देना ।
हो जाएँ पार भव से, इतनी शक्ति देना ।
हे सरस्वती माता, बस...
आए हैं शरण तेरी...

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय-सराय अलावर्दी
गुरुग्राम (हरियाणा)

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

दिसंबर 2021

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ.अंशज सिंह
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,

New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"जैसे हजारों दीयों को एक ही दिए से, बिना उसका प्रकाश कम किए जलाया जा सकता है, उसी प्रकार खुशी बाँटने से खुशी कभी कम नहीं होती।

- सुपर-100 के विद्यार्थियों ने अभिभूत किया है: मुख्यमंत्री 5
- सपनों को साकार करती एक महत्त्वाकांक्षी योजना 'सुपर-100' 6
- निपुण हरियाणा से निपुण भारत 12
- मधुर यादें छोड़ गया मोरनी नेचर कैंप 14
- जिम्मेदारियों का अहसास करवाता आज़ादी का अमृत महोत्सव 18
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को गति देते हैं समूह गीत 20
- भाषा-शिक्षण में साहित्य की भूमिका 22
- खेल-खेल में विज्ञान 24
- शिक्षक व समाज के सामंजस्य की महक बिखेरता सिठाना का सरकारी स्कूल 28
- अब मुझे अंग्रेज़ी से डर नहीं लगता 31
- Miracle of Encouraging Positive Words... 32
- Wherever I lay my hat...that's my Home 33
- Human Rights: 34
- A Way to Create a Fairer Society for Future Generations 34
- Creating New Waves in Education- A Holistic.. 35
- Compendium of Academic Courses After +2 41
- The Light Within 45
- P.I.G. 46
- Amazing Facts 48
- General Quiz 49
- आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

गढ़े जा रहे नित नये कीर्तिमान

विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा निरंतर विकास की ओर अग्रसर है। प्रदेश में चल रहे शिक्षा के प्रभावी सुधारात्मक कार्यक्रमों का असर स्पष्ट देखा जा सकता है। शैक्षणिक व अन्य पाठ्येतर गतिविधियों से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो रहा है। गत माह 75 विद्यार्थियों ने यूनम पीक फतह करके कीर्तिमान रचा है। 'सुपर-100' कार्यक्रम के विद्यार्थी लगातार कमाल का प्रदर्शन कर रहे हैं। इस वर्ष जेईई एडवांस परीक्षा को राजकीय विद्यालयों में पढ़ रहे 29 विद्यार्थियों ने क्वालिफाई करके यह सिद्ध किया है कि अगर उन्हें उचित अवसर मिलें तो वे भी किसी से कम नहीं हैं। गौरतलब है कि इनमें से बहुत से विद्यार्थी ऐसे हैं जो बेहद साधारण परिवार से संबंध रखते हैं। 'सुपर-100' कार्यक्रम ऐसे बच्चों को अपनी प्रतिभानुरूप प्रदर्शन का अवसर प्रदान कर रहा है। इसी तरह मैडिकल स्ट्रीम के 64 विद्यार्थियों ने एनटीए द्वारा आयोजित नीट परीक्षा को क्वालिफाई करके इतिहास रचा है। निश्चित तौर पर इनमें से काफी संख्या में विद्यार्थी एम्स सहित प्रतिष्ठित संस्थानों में एमबीबीएस, बीएएमएस और बीडीएस में प्रवेश पा लेंगे।

'शिक्षा सारथी' का यह अंक आपको कैसा लगा- अपनी राय अवश्य भेजें। आप अपनी चहेती पत्रिका के कलेवर में क्या परिवर्तन देखना चाहते हैं, इस संबंध में भी अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें।

- संपादक

डॉ. प्रदीप राठौर

सुपर-100 के विद्यार्थियों ने अभिभूत किया हैः मुख्यमंत्री

अगर किसी के पास प्रतिभा है तो कोई आपको अपने सपनों को पूरा करने से नहीं रोक सकता, फिर चाहे कोई ग्रामीण अंचल से ही क्यों न हो। ऐसी ही प्रतिभाओं को तलाशने और तराशने का कार्य करने के लिए सुपर-100 कार्यक्रम का आरंभ किया गया था। जैसा जबरदस्त प्रदर्शन ये विद्यार्थी कर रहे हैं, उसे देखकर मैं बेहद अभिभूत हूँ। वास्तव में इन विद्यार्थियों ने अपनी सफलता से प्रदेश को गौरवान्वित किया है। ये विचार बीते दिनों पंचकूला में आयोजित राज्य स्तरीय 'प्रतिभा सम्मान समारोह' में सुपर-100 के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने कहे। कार्यक्रम में जेईई एडवांस परीक्षा- 2021 (सुपर 100 कार्यक्रम के तहत) और सिविल सेवा परीक्षा-2020 के उत्तीर्ण छात्रों को आमंत्रित किया गया था। शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल, विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञानचंद गुप्ता, सांसद श्री रतन लाल कटारिया भी इस मौके पर मौजूद रहे।

हरियाणा में गरीब परिवार का कोई भी प्रतिभावान छात्र अपने सपनों को पूरा करने से वंचित न रहे, इसके लिए मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने घोषणा की कि परिवार पहचान पत्र के अन्तर्गत जिन परिवारों की सत्यापित आय 1.80 लाख रुपये प्रति वर्ष से कम है, ऐसे परिवारों के बच्चों को मुफ्त शिक्षा मिलेगी।

जेईई एडवांस 2021 को पास करने वाले गरीब पृष्ठभूमि के 29 छात्रों का मनोबल बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आप जिस भी क्षेत्र को चुनेंगे उसमें आप सभी हरियाणा को गौरवान्वित करेंगे। उन्होंने कहा कि आपके सपनों के लिए सही शैक्षणिक माहौल देने के लिए आप सभी के माता-पिता ने भी कड़ी मेहनत की है, जो सराहनीय है।

इससे पूर्व बोलते हुए डॉ. महावीर सिंह ने मुख्यातिथि व अन्य गणमान्य अतिथियों का अभिनन्दन करते हुए कहा कि यह गर्व की बात है कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने तमाम व्यस्तताओं में से प्रतिभाओं को सम्मानित करने का समय निकाला। उन्होंने कहा कि ये बच्चे उस परिवेश से आते हैं जहाँ संसाधनों की तो कमी है, लेकिन प्रतिभा की नहीं। उन्होंने कहा कि सुपर-100 कार्यक्रम के तहत हम ऐसी ही प्रतिभाओं को तलाशने व तराशने का कार्य कर रहे हैं। सुपर-100 योजना बिहार के सुपर-30 की तर्ज पर हरियाणा में संचालित की जा रही है। उन्होंने कहा कि साधन-सम्पन्न लोगों को तो कोचिंग जैसी सारी सुविधाएँ उपलब्ध हो जाती हैं, परंतु सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बहुत से प्रतिभावान और साधन-विपन्न बच्चे इनसे महरूम रह जाते हैं। साधन न होने के कारण कई बार ये प्रतिभाएँ गुमनामी के अंधकार में दब कर दम तोड़ जाती हैं। सुपर-100 कार्यक्रम ऐसे बच्चों के लिए वरदान साबित हुआ है।

अपने उद्बोधन में माननीय मुख्यमंत्री ने कहा कि 2014 में जब उन्होंने मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी, तब राज्य का समग्र और समान विकास सुनिश्चित करना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता थी। जिसके लिए राज्य सरकार द्वारा कई नई अनूठी योजनाएँ बनाई गईं जो मील का पत्थर साबित हुईं।

कृषि में प्रधान प्रदेश अब शिक्षा में भी प्रधान-

इस अवसर पर बोलते हुए शिक्षा मंत्री श्री कँवरपाल ने कहा कि हरियाणा को एक कृषि प्रधान राज्य के रूप में जाना जाता है, लेकिन जिस तरह से इन उच्च प्रतियोगी परीक्षाओं में छात्रों की बढ़ती संख्या के साथ राज्य ने शिक्षा के क्षेत्र में खुद को आगे बढ़ाया है, यह स्पष्ट रूप से राज्य सरकार द्वारा इस क्षेत्र में किए गए शानदार कार्यों को उजागर करता है।

उन्होंने कहा कि मुझे उम्मीद है कि ये छात्र जिस भी क्षेत्र में जाएँगे, हरियाणा को गौरवान्वित करेंगे। मैं उनके माता-पिता की भी सराहना करता हूँ, जिन्होंने कुछ न कुछ बलिदान किया है ताकि इन बच्चों को अपने सपनों को प्राप्त करने के लिए सही शैक्षणिक वातावरण दिया जा सके।

विद्यार्थियों ने किया हार्दिक आभार-

इससे पूर्व राज्य सरकार के सुपर-100 कार्यक्रम के तहत मुफ्त कोचिंग प्राप्त कर जेईई एडवांस परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों ने मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया कि मुख्यमंत्री ने सुपर-100 कार्यक्रम के माध्यम से उन्हें अपने सपनों को पूरा करने का एक सुनहरा अवसर दिया है।

गरीब परिवार से संबंध रखने वाले अधिकांश छात्रों ने अपने अनुभव साझा किए कि कैसे वे हमेशा आईआईटी में प्रवेश पाने का सिर्फ सपना देखते थे, लेकिन उनकी वित्तीय स्थिति उन्हें जेईई जैसी प्रतियोगी परीक्षा को पास करने के लिए महँगी कोचिंग लेने से वंचित रखती थी। मुख्यमंत्री द्वारा शुरू किए गए अनोखे सुपर-100 कार्यक्रम ने न केवल उन्हें अपने सपनों को प्राप्त करने में मदद की बल्कि उनके जैसे योग्य छात्रों को आशा की एक किरण भी दी है कि वे भी अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं।

स्कूल शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह, उच्चतर एवं तकनीकी शिक्षा विभागों के प्रधान सचिव श्री आनंद मोहन शरण, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा डॉ. जे. गणेशन, उच्चतर एवं तकनीकी शिक्षा विभागों के निदेशक श्री चंद्र शेखर खरे, निदेशक मौलिक शिक्षा डॉ. अंशज सिंह, माध्यमिक शिक्षा की अतिरिक्त निदेशक श्रीमती अमृता सिंह, मौलिक शिक्षा के संयुक्त निदेशक श्री विवेक कालिया, सहायक निदेशक श्री नंदकिशोर वर्मा, श्री कुलदीप मेहता, विकल्प के प्रबंधक श्री नवीन मिश्रा, ऐस टूटोरियल से श्री पीवी गुप्ता, एलन करियर इंस्टीट्यूट से श्री सदानंद व जितिन गुप्ता भी इस अवसर पर मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने किया।

drpradeeprathore@gmail.com

सपनों को साकार करती एक महत्त्वाकांक्षी योजना 'सुपर-100'

लाभ से वंचित के परिवारों से निकल रहे हैं डॉक्टर व इंजीनियर

प्रमोद कुमार

सरकार की कल्याणकारी तथा विद्यार्थी केन्द्रित नीतियों का परिणाम है कि स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में हरियाणा शानदार तरीके से आगे बढ़ रहा है तथा अन्य राज्यों के लिए भी मार्गदर्शक बन रहा है। यह कार्य माननीय मुख्यमंत्री महोदय के कुशल मार्गदर्शन में, माननीय शिक्षामंत्री महोदय के नेतृत्व में तथा अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय के निर्देशन में निरन्तर आगे बढ़ रहा है। विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा सरकारी विद्यालयों में उत्कृष्ट परिणाम लाने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष 2018 में सुपर-30 की तर्ज पर एक योजना आरम्भ की गई थी जिसके तहत हरियाणा राज्य के सरकारी विद्यालयों में दसवीं की बोर्ड परीक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों को जेईई, नीट की तैयारी निःशुल्क करवाने की व्यवस्था की

गई। रेवाड़ी में विकल्प फाउंडेशन तथा पंचकूला में ऐस टूटोरियल्स, चण्डीगढ़ तथा एलन करियर इंस्टीट्यूट, पंचकूला के साथ मिलकर चलाए गये इस कार्यक्रम में विभाग द्वारा बच्चों का जिला स्तर पर एक टैस्ट आयोजित किया गया। इस टैस्ट में सफल विद्यार्थियों को रेवाड़ी में विकल्प केन्द्र में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया तथा उसके बाद दोबारा एक टैस्ट लिया गया। अंत में कक्षा दसवीं के अंकों, जिला स्तरीय टैस्ट के अंकों तथा पाँच दिवसीय प्रशिक्षण उपरान्त टैस्ट के अंकों की साझी मैरिट तैयार की गई तथा इसी आधार पर मेडिकल व नॉन मेडिकल के प्रशिक्षण के लिए विद्यार्थियों का चुनाव किया गया। इन चुने हुए विद्यार्थियों को रेवाड़ी तथा पंचकूला के छात्रावासों में रखा गया। विकल्प फाउंडेशन तथा ऐस टूटोरियल्स द्वारा इनकी कोचिंग का प्रबन्ध किया गया। गौरतलब है कि विकल्प फाउंडेशन ने पहले ही इस क्षेत्र में जिला प्रशासन रेवाड़ी के साथ मिलकर कार्य करते हुए वर्ष 2015 में निशुल्क कोचिंग के द्वारा 18 में से 15 बच्चों का आईआईटी में दाखिला करवाया तथा इस फाउंडेशन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अपना लोहा मनवाया गया है। ऐस टूटोरियल्स चण्डीगढ़ द्वारा भी कोचिंग के क्षेत्र में अनेक सफलताएँ अर्जित की गई हैं। विभाग के साथ हुए समझौते के अनुसार दोनों संस्थाओं द्वारा सभी प्रशिक्षकों का प्रबन्ध किया गया, विभिन्न टैस्ट सीरीज का आयोजन किया गया और दो वर्षों में जेईई, नीट एडवांस की तैयारी करवाई गई। संस्थाओं को विभाग द्वारा कोई वित्तीय लाभ नहीं दिया गया, यह प्रशिक्षण संस्थाओं द्वारा विद्यार्थियों को निःशुल्क उपलब्ध करवाया गया। 10+2 तथा बोर्ड परीक्षा के लिए रेवाड़ी तथा पंचकूला के विद्यालयों में विद्यार्थियों को तैयारी भी करवाई गई।

इस योजना का उद्देश्य अन्त्योदय के सपने को

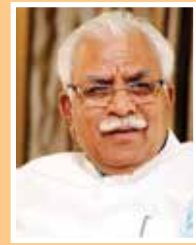

यह अपार हर्ष का विषय है कि सुपर-100 कार्यक्रम के 29 विद्यार्थियों ने देश की सबसे प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग परीक्षा में उत्साहजनक परिणाम दिए हैं। सुपर-100 राज्य के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए प्रदेश सरकार की एक अभिनव पहल है। कई बार देखा जाता है कि आर्थिक अभावों के कारण प्रतिभाएँ दम तोड़ देती हैं। सुपर-100 कार्यक्रम साधारण परिवारों के मेधावी विद्यार्थियों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। पहले पंचकूला और रेवाड़ी में केवल दो कोचिंग सैंटर थे, पिछले वर्ष से हमने इन सैंटरों को बढ़ाकर चार कर दिया है। मैं इन सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

लॉर्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली 'थ्री आर' : राइटिंग, रीडिंग और अर्थमेटिक पर केंद्रित थी, जो एक नागरिक के समग्र विकास को सुनिश्चित नहीं करती थी। इसलिए युवा पीढ़ी के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उनमें राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने के लिए नई शिक्षा नीति-2020 की शुरुआत की गई है। हरियाणा में 2025 तक इस नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की दिशा में काम करना शुरू कर दिया गया है। देश में इस नीति को लागू करने का लक्ष्य 2030 तक है, लेकिन हरियाणा राष्ट्रीय लक्ष्य से 5 साल पहले ही इसे हासिल कर लेगा।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

सुपर-100 कार्यक्रम साधारण परिवारों के मेधावी बच्चों के जीवन में एक नया प्रकाश लेकर आया है। इनमें से बहुत से बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने कभी सपना भी नहीं लिया होगा कि वे आईआईटी में प्रवेश लेंगे। राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों ने एक बार फिर से सिद्ध करके दिखाया है कि अगर उन्हें उचित अवसर मिलें, तो वे भी किसी से कम नहीं हैं। मैं विद्यार्थियों के साथ-साथ विद्यालय शिक्षा विभाग को भी बधाई देता हूँ। सुपर-100 की सफलता को देखते हुए एनडीए तथा एसएसबी की तैयारी के लिए भी समुचित व्यवस्था की गई है जो अब सरकारी स्कूलों के लड़के तथा लड़कियों दोनों के लिए उपलब्ध होगी।

कँवरपाल
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

नीट तथा जेईई एडवांस परीक्षा-2021 में सुपर-100 के विद्यार्थियों ने कमाल का प्रदर्शन किया है। वास्तव में विद्यालय शिक्षा विभाग के द्वारा एक इतिहास रचा गया है। राजकीय विद्यालयों के इन चमकते सितारों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

ये बच्चे उस परिवेश से आते हैं जहाँ संसाधनों की तो कमी है, लेकिन प्रतिभा की नहीं। सुपर-100 कार्यक्रम के तहत हम ऐसी ही प्रतिभाओं को तलाशने व तराशने का कार्य कर रहे हैं। सुपर-100 योजना बिहार के सुपर-30 की तर्ज पर हरियाणा में संचालित की जा रही है। साधन-सम्पन्न लोगों को तो कोचिंग जैसी सारी सुविधाएँ उपलब्ध हो जाती हैं, परंतु सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बहुत से प्रतिभावान और साधन-विपन्न बच्चे इनसे महरूम रह जाते हैं। सुपर-100 कार्यक्रम ऐसे बच्चों के लिए वरदान साबित हुआ है।

मैं जेईई एडवांस परीक्षा -2021 में सफल रहे विद्यार्थियों व इनके माता-पिता को भी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

डॉ.महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

साकार करना तथा 'सबका साथ सबका विकास' की अवधारणा को धरातल पर लाना है। सरकार का उद्देश्य अन्तिम व्यक्ति के सशक्तिकरण के लिए प्रयास करना है, यह योजना भी उसी सन्दर्भ में बनाई गई है। राज्य के सरकारी विद्यालयों में मैरिट लेकर अथवा 80 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर भी विद्यार्थी कोचिंग सैंटर की भारी भरकम फीस न भर पाने के कारण प्रतियोगिता में पिछड़ जाते थे और देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में शिक्षा ग्रहण करने से वंचित रह जाते थे। आज ये विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्हें प्रशिक्षण के साधन उपलब्ध हो गए हैं तो इन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार प्रदर्शन करके सफलता भी प्राप्त कर ली है। इन्हीं धारणाओं के मध्यनज़र यह योजना बनाई गई है ताकि प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे मेधावी विद्यार्थी इस अवसर का लाभ उठाकर छात्रावास में रहकर व उत्तम प्रशिक्षण प्राप्त करके अपने सपने साकार कर सकें।

इन विद्यार्थियों को वर्दी, पाठ्य-पुस्तकें, स्टेशनरी, भोजन, परिवहन और हॉस्टल सुविधा निःशुल्क उपलब्ध करवाई गई तथा इस पर खर्च सरकार द्वारा वहन किया गया। विद्यार्थियों के मनोबल को उच्च रखने, उन्हें अभिप्रेरित करने, पठन-पाठन को लेकर उनका उत्साह बनाए रखने के लिए भिन्न-भिन्न कार्यक्रम जिनमें खेलकूद, योग, ध्यान, मनोवैज्ञानिक परामर्श आदि चलाए गए। एक विभागीय कमेटी हर तीन मास की प्रगति रिपोर्ट बनाकर निदेशक सैकेण्डरी शिक्षा के साथ-साथ अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय को प्रस्तुत करती थी। विद्यार्थियों के अभिभावकों से मिलने के लिए पीटीएम आदि में शामिल होकर बच्चे की प्रगति रिपोर्ट साँझी करने के लिए समुचित व्यवस्था की गई थी। आईसीटी के माध्यम से बच्चे की साप्ताहिक रिपोर्ट भी माता-पिता को उनके मोबाइल फोन पर उपलब्ध करवाई जाती थी। इन विद्यार्थियों को टेलीविजन, लेपटॉप, इंटरनेट और मोबाइल फोन से दूर रखा गया ताकि समय और ध्यान पढ़ाई पर लगा रहे। बच्चों को विभिन्न शैक्षणिक भ्रमण करवाए गये जिसमें साइंस सिटी कपूरथला के साथ-साथ आईआईटी दिल्ली आदि शामिल हैं। विद्यार्थियों को सुपर-30 फिल्म भी दिखाई गई। भिन्न-भिन्न समय पर निदेशक सैकेंडरी शिक्षा, निदेशक मौलिक शिक्षा, राज्य परियोजना निदेशक महोदय द्वारा बच्चों को सम्बोधित किया जाता रहा है। अतिरिक्त मुख्य सचिव विद्यालय शिक्षा स्वयं पर्यवेक्षण करते हैं तथा पूरे कार्यक्रम के साथ सीधे जुड़े रहकर हर उत्थान के लिये हर संभव प्रयास करते हैं।

इस कार्यक्रम से उन विद्यार्थियों को लाभ मिला जो कोचिंग के अभाव में पिछड़ जाते थे। हमारे सरकारी विद्यालयों की प्रतिभा उस प्रतिस्पर्धा की दौड़ में पीछे रह जाती थी। ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावक हॉस्टल आदि की व्यवस्था के अभाव में बच्चों को उस तरीके से आगे नहीं ले जा पाते थे जैसे कि आजकल पढ़े-लिखे शहरी और अर्ध शहरी माता-पिता प्रयास करते हैं। प्रदेश के विद्यार्थियों में बहुत प्रतिभा है। जैसे किसी खिलाड़ी की प्रतियोगिता की तैयारी एक कोच के माध्यम से सफलता को आसान बनाती है, उसी प्रकार विभाग की इस योजना के अन्तर्गत चुने गए विद्यार्थियों की सफलता की राह भी आसान बनी है। यही इस सुपर-100 कार्यक्रम का उद्देश्य है।

प्रयोग के तौर पर आरम्भ किया गया यह कार्यक्रम 2018-20 की सफलता की कहानी कहता है। इसके अतिरिक्त वर्ष 2019-21 के बैच की बात की जाए तो इसमें प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए तीसरी संस्था एलन करियर इंस्टीट्यूट, पंचकूला भी शामिल हो गई है तथा विद्यार्थियों की संख्या 222 है जो जिसका विवरण निम्न तालिका में है:-

सुपर 100 कार्यक्रम के बारे में जानकारी

	विकल्प फाउंडेशन		ऐस ट्यूटोरियल		एलन करियर इंस्टीट्यूट		कुल		
वर्ष	मेडिकल	नॉन-मेडिकल	मेडिकल	नॉन-मेडिकल	मेडिकल	नॉन-मेडिकल	मेडिकल	नॉन-मेडिकल	कुल
2019-21	44	46	38	49	21	24	103	119	222
2020-22	45	115	61	71	20	25	126	211	337

वर्ष 2020-22 के लिए भी विभाग इस योजना पर कार्य कर रहा है। इन विद्यार्थियों के परिणाम हालांकि बहुत ही उत्साहवर्धक हैं परन्तु कोविड-19 की त्रासदी ने इस परिणाम को काफी हद तक प्रभावित किया है। मार्च के अन्तिम सप्ताह में जब तैयारी जोरों से चल रही थी, उसी समय हॉस्टल बन्द हो गये और विद्यार्थियों को घर लौटना पड़ा जिसके कारण उन्हें ऑनलाइन माध्यम से समन्वय बनाने में एक मास से अधिक का समय लगा।

सत्र 2019-21 में नॉन मेडिकल स्ट्रीम में रेवाड़ी तथा पंचकूला केन्द्रों में 119 विद्यार्थियों के द्वारा यह प्रशिक्षण पूरा किया गया है। जेईई मेन परीक्षा के दौरान 54 विद्यार्थियों के द्वारा एडवांस टैस्ट के लिए क्वालीफाई किया गया जिनमें से सुपर-100 के 28 विद्यार्थियों व एक राजकीय विद्यालय के विद्यार्थी ने आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में अपनी सीट को पक्का कर लिया है।

हरियाणा स्कूल शिक्षा के इतिहास में लगातार यह दूसरी उपलब्धि है, जिसके लिए पूरा विद्यालय शिक्षा विभाग बधाई का पात्र है। तीन वर्ष की इस यात्रा में विभाग तथा कोचिंग संस्थानों द्वारा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई गई। लाभ से वंचित वर्ग के ये विद्यार्थी जिस तरीके से इस मुकाम तक पहुँचे हैं, यह सचमुच किसी चमत्कार से कम नहीं है। ऐसे विद्यार्थी जो केवल आईआईटी में पहुँचने का सपना देखते थे, उनके लिए आईआईटी के द्वार खुल गये हैं। हरियाणवी अपनी प्रतिभा के धनी हैं और अक्सर यह मान लिया जाता है कि आईआईटी में केवल प्राइवेट स्कूलों के अथवा धनी परिवारों के बच्चे ही जाते हैं। सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए यह संभव नहीं है। सुपर-100 के इस प्रयोग ने लगातार दूसरी बार यह साबित कर दिया कि सभी विद्यार्थी एक जैसा प्रदर्शन

नीट-परीक्षा में भी सुपर-100 के विद्यार्थियों ने आशा से बढ़ कर प्रदर्शन किया है। शिक्षा मंत्री महोदय ने अपने कर-कमलों से 18 दिसंबर को पंचकूला के इंद्रधनुष सभागार में इन बच्चों को सम्मानित करके इनका हौसला बढ़ाया है। कुछ विद्यार्थियों व अभिभावकों ने इस कार्यक्रम में बताया कि उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि उनके बच्चे प्रतिष्ठित संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करके डॉक्टर बन पाएँगे। अनेक बार आर्थिक अभावों के कारण प्रतिभावान विद्यार्थियों की प्रतिभा दब कर रह जाती है। निश्चित तौर पर सुपर-100 कार्यक्रम ऐसे विद्यार्थियों के जीवन में एक नई रोशनी लेकर आया है। इस वर्ष सुपर-100 केंद्रों की संख्या दो से बढ़ाकर चार की गई है। अगले वर्ष सफल विद्यार्थियों के आँकड़े में और बढ़ोतरी होगी।

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

सत्र 2019-21 के दौरान सफलता अर्जित करने वाले विद्यार्थियों का विवरण निम्नोक्त है-

क्रमांक	कोचिंग पार्टनर	छात्र का नाम	पिता का नाम	जिला	कैटेगरी	रैंक
1	विकल्प रेवाड़ी	ललित	लक्ष्मीनारायण	सोनीपत	GEN	4104
2	विकल्प रेवाड़ी	जस्सी	कृष्ण कुमारी	फतेहाबाद	OBC-NCL	878
3	विकल्प रेवाड़ी	नकुल महला	वज़ीर	कैथल	GEN	6960
4	विकल्प रेवाड़ी	सुशील कुमार	चरणजीत	अंबाला	SC	192
5	विकल्प रेवाड़ी	विनोद कुमार	मोहन सिंह	हिसार	GEN-EWS	1414
6	विकल्प रेवाड़ी	गौरव	भूप सिंह	हिसार	OBC-NCL	2427
7	विकल्प रेवाड़ी	सचिन	सतपाल	हिसार	OBC-NCL	2448
8	विकल्प रेवाड़ी	योगेश	मुन्नी लाल	गुरुग्राम	OBC-NCL	2575
9	विकल्प रेवाड़ी	अंजू दुहन	अनिल	रोहतक	GEN	14392
10	विकल्प रेवाड़ी	सुशील कुमार	पवन	भिवानी	OBC-NCL	3619
11	विकल्प रेवाड़ी	अमन	राज कुमार	जींद	GEN-EWS	2247
12	विकल्प रेवाड़ी	हेमंत कुमार	राजेंद्र कुमार	भिवानी	OBC-NCL	4186
13	विकल्प रेवाड़ी	भावना	इंद्र कुमार	फतेहाबाद	OBC-NCL	4228
14	विकल्प रेवाड़ी	सुष्मिता	गुरदेव	कैथल	GEN-EWS	2966
15	विकल्प रेवाड़ी	सूरज चौहान	निशान सिंह	अंबाला	GEN-EWS	3144
16	विकल्प रेवाड़ी	रवि	सुरजीत सिंह	कुरुक्षेत्र	SC	829
17	विकल्प रेवाड़ी	रवि भारती	सुरेश कुमार	कैथल	OBC-NCL	6369
18	विकल्प रेवाड़ी	कमल शर्मा	प्रकाश वीर	फरीदाबाद	GEN-EWS	4107
19	विकल्प रेवाड़ी	सचिन कुमार	शमशेर सिंह	हिसार	SC	1441
20	विकल्प रेवाड़ी	अमन	मुकेश पासवान	पंचकूला	SC	309
21	विकल्प रेवाड़ी	दीपा	सुरेश कुमार	कैथल	SC	487
22	ऐस चंडीगढ़	साहिल	रविंदर	जींद	SC	838
23	ऐस चंडीगढ़	सचिन	वेद प्रकाश	हिसार	SC	861
24	ऐस चंडीगढ़	निखिल	गुरदेव सिंह	अंबाला	SC	2904
25	ऐस चंडीगढ़	यशवेंद्र	महेंद्र सिंह	महेंद्रगढ़	SC	3731
26	एलन चंडीगढ़	हरि किशन	रमेश	नूह	SC	1721
27	ऐस ट्यूटोरियल	साहिल	जसवंत	सिरसा	GEN-EWS	2265
28	ऐस ट्यूटोरियल	आकाश	गुगन राम	फतेहाबाद	SC	1772
29	जीएसएसएस खोरी	साहिल	चंद्रभान	रेवाड़ी	SC	3301

नीट-2021 का परिणाम

क्रमांक	छात्र का नाम	पिता का नाम	कैटेगरी	प्राप्त कुल अंक (720)	अखिल भारतीय रैंक	श्रेणी वार रैंक	संस्थान	क्वालीफ़ाइड (हाँ/नहीं)
1	दीपक	सुभाष	GEN	690	445	39	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
2	रमन	भूप सिंह	OBC	680	978	236	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
3	तुषार कंबोज	भजन लाल	OBC	671	1467	381	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
4	किरण	नौरंग	GEN	660	2662	1531	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
5	निशा	राजेश	GEN	660	2713	1549	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
6	सुमेधा	निर्मल कुमार	GEN	660	2693	293	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
7	अंकित कुमार	अशोक कुमार	SC	656	3170	65	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
8	पूजा	रमेश	GEN	650	4046	457	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
9	विनोद कुमार	राजकुमार	GEN	614	13487	1911	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
10	रचना	बीरेंद्र	GEN	597	20350	3008	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
11	रुबि	अनिल कुमार	OBC	584	26402	11079	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
12	शिव	जय भगवान	SC	567	35000	786	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
13	गायत्री	ओमप्रकाश	OBC	550	46310	20123	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
14	सचिन सैनी	किशोर सैनी	OBC	546	49224	21436	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
15	आरती	संदीप कुमार	OBC-NCL	545	49477	21544	ऐस ट्यूटोरियल, चंडीगढ़	हाँ
16	नीशू	बीरभान	OBC	534	57601	25335	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
17	अंकुश	सुरजीत सिंह	SC	534	57599	1652	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
18	मनीष कुमारी	मिथलेश मिस्त्री	OBC	504	81341	36132	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
19	रवीना	ओम प्रकाश	SC	498	86250	3361	ऐस ट्यूटोरियल, चंडीगढ़	हाँ
20	सिमरन	पवन कुमार	SC	475	107566	5142	ऐस ट्यूटोरियल, चंडीगढ़	हाँ
21	रजत	ओम प्रकाश	GEN	449	134613	19648	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
22	रजत	गंगा राम	SC	425	191962	11144	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
23	प्रीति	करतार सिंह	SC	422	165462	11566	विकल्प रेवाड़ी	हाँ
24	अंजलि	सत्यपाल सिंह	SC	398	194573	15247	ऐस ट्यूटोरियल, चंडीगढ़	हाँ

कर सकते हैं। आवश्यकता है तो बस एक समान अवसर दिये जाने की। इस पूरे कार्यक्रम में विकल्प फाऊंडेशन रेवाड़ी के प्रबन्धक श्री नवीन मिश्रा तथा ऐस टूटोरियल्स के प्रबन्धक श्री पीवी गुप्ता द्वारा भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई गई है।

इस कार्यक्रम में एससी श्रेणी के 10 बच्चों ने आईआईटी में अपना स्थान पक्का कर लिया है तथा अम्बाला से सुशील कुमार की एससी श्रेणी में ऑल इंडिया रैंक 192 है जो किसी चमत्कार से कम नही है। इस विद्यार्थी को किसी भी आईआईटी में अपनी पंसदीदा स्ट्रीम में दाखिला मिलना तय है। यदि ओबीसी श्रेणी की बात की जाए तो ओबीसी श्रेणी के 8 विद्यार्थियों ने सफलता प्राप्त की है। वहीं सामान्य श्रेणी के भी 8 विद्यार्थियों ने भी यह उपलब्धि हासिल की है।

1 नवंबर, 2021 को जारी नीट के परीक्षा परिणामों के तहत यदि मेडिकल के विद्यार्थियों की प्रगति का अवलोकन किया जाए तो ये विद्यार्थी सफलता की नई इबारत लिख रहे हैं। लाभ से वंचित वर्ग के बच्चों द्वारा नीट में जो मुकाम हासिल किया गया है वह अपेक्षा से ऊपर है। इन विद्यार्थियों ने यह साबित कर दिया है कि अब मेडिकल की प्री-शिक्षा सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों की पहुँच से बाहर नहीं है। नीट-2021 का परिणाम उपर्युक्त तालिका में दिया गया है।

सुपर-100 हरियाणा के वर्ष 2019-21 के नीट में सामान्य श्रेणी के विद्यार्थी दीपक द्वारा ऑल इंडिया रैंक 39 प्राप्त करके नया कीर्तिमान स्थापित किया गया है। वहीं अंकित द्वारा एससी श्रेणी में ऑल इंडिया रैंक 65 प्राप्त करके महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की गई है। इसके अतिरिक्त श्रेणीवार रैंक रमन 236, सुमेधा 293, तुषार 381, पूजा 457, शिव 786 ऐसे नाम हैं जिन पर विद्यालय शिक्षा विभाग गर्व कर रहा है। किरण 1531, निशा 1549, अंकुश 1652, विनोद 1911 ऐसे नाम हैं जिन्हें हरियाणा के किसी भी मेडिकल कॉलेज में सीट मिलना तय है। राज्य के कुल 62 विद्यार्थियों द्वारा नीट की परीक्षा पास की गई है जिसमें से लगभग 20-25 विद्यार्थी अच्छे कॉलेज (एम्स, गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज) में एमबीबीएस के

सुपर-100 कार्यक्रम को और मज़बूती देगा 'बुनियाद'

सुपर-100 कार्यक्रम को और अधिक मज़बूती देने के लिए विभाग ने कमर कस ली है। इस कार्यक्रम की नींव को सुदृढ़ करने के लिए 'बुनियाद' नामक कार्यक्रम आरंभ किया गया है। राजकीय विद्यालयों में कक्षा नौवीं एवं दसवीं के लिए बनाया गया यह कार्यक्रम विद्यालय शिक्षा विभाग विकल्प फाउंडेशन, रेवाड़ी के सहयोग से संचालित कर रहा है। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों को एनटीएसई तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम के तहत जिला मुख्यालय पर एक-एक बुनियाद केंद्र बनाया गया है। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बिठवाना, जिला रेवाड़ी में ई-लर्निंग स्टूडियो स्थापित किया गया है, जहाँ से सभी 22 केंद्रों पर लाइव तथा रिकार्ड किए गए लैक्चर्स का प्रसारण किया जाएगा।

क्या है चयन प्रक्रिया?

'बुनियाद' कार्यक्रम के लिए विद्यार्थियों का चयन स्क्रीनिंग परीक्षा के आधार पर किया जा रहा है, जिसके दो चरण हैं। प्रथम चरण में खंड स्तर पर यह परीक्षा ली जाएगी। दूसरे चरण में जिला स्तर पर स्क्रीनिंग परीक्षा ली जाएगी। दूसरे चरण की परीक्षा में अर्जित अंकों के आधार पर विद्यार्थियों का इस कार्यक्रम में चयन किया जाएगा। प्रति जिला 120 विद्यार्थियों का चयन होगा, इस प्रकार प्रदेश भर से 2,640 विद्यार्थी चुन लिए जाएँगे। चयनित विद्यार्थियों को तीन बैचों में (40 विद्यार्थी प्रत्येक में) विभाजित किया जाएगा। विद्यार्थियों के प्रत्येक बैच को निर्धारित केंद्र पर प्रति सप्ताह दो कक्षाओं में भाग लेना होगा। इन कक्षाओं में विद्यार्थियों के पहले पढ़ाए गए विषय से संबंधित शंकाओं का समाधान भी किया जाएगा और साथ ही उनके लिए साप्ताहिक परीक्षा का भी आयोजन किया जाएगा। संबंधित केंद्र के प्राचार्यों को कार्यक्रम का समग्र प्रभारी बना दिया गया है।

विभाग में इस कार्यक्रम के प्रभारी संजय कुमार ने बताया कि कार्यक्रम के दूसरे चरण में अगले वर्ष यानी मार्च-2022 में इन सभी 2,640 विद्यार्थियों का जिला स्तर पर स्क्रीनिंग टैस्ट लिया जाएगा। इनमें से चुनिंदा 200 बच्चों को एनटीएसई की कोचिंग के लिए रेवाड़ी स्थित विकल्प संस्थान में कोचिंग व निःशुल्क आवासीय सुविधा दी जाएगी। शेष विद्यार्थियों को दसवीं कक्षा के पाठ्यक्रम के साथ-साथ अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराई जाएगी। उन्होंने बताया कि इस वर्ष विद्यार्थियों के पंजीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है। उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों व अभिभावकों में इस कार्यक्रम को लेकर जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है। लैवल-1 परीक्षा के लिए लगभग 21,000 विद्यार्थी पंजीकरण करवा चुके हैं। अब लैवल-1 परीक्षा के आयोजन की तैयारी चल रही है।

सुदेश रानी
हिंदी अध्यापिका
रावमा विद्यालय बुंगा
जिला पंचकूला, हरियाणा

कोर्स में सीट प्राप्त कर लेंगे।

कार्यक्रम की सफलता को देखते हुए गत वर्ष माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा सुपर-100 के केंद्रों की संख्या को दो से बढ़ाकर चार कर दिया गया था ताकि प्रदेश के अधिक से अधिक बच्चों को लाभ मिल सके। अब चार केन्द्रों में प्रशिक्षण ग्रहण कर रहे बच्चे अपनी सफलता का परचम लहराएँगे, ऐसी आशा है।

विभाग द्वारा सुपर-100 कार्यक्रम के सशक्तीकरण के लिए कक्षा 9वीं से ही प्रतिभाभान बच्चों को पहचान कर इस कार्यक्रम में शामिल करने के उद्देश्य से 'बुनियाद' कार्यक्रम आरम्भ किया गया है जिसमें बच्चों को न केवल एनटीएसई, केवीपीवाई तथा अन्य स्कॉलरशिप के लिए तैयारी करवाई जाएगी अपितु यह कार्यक्रम सुपर-100 के अन्तर्गत जेईई तथा नीट की परीक्षा की तैयारी में एक मज़बूत नींव का काम करेगा। इसके लिए पूरे राज्य में जिला स्तर पर 22 केन्द्र बनाये गए हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी के दूरदर्शी नेतृत्व व माननीय शिक्षा मंत्री जी के कुशल निर्देशन में विभाग बुनियाद जैसे कार्यक्रम के माध्यम से नये हरियाणा के निर्माण में जुट गया है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी राष्ट्रीय शिक्षण संस्थानों में अपनी सीटें पक्की कर सकें।

कार्यक्रम अधिकारी
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा हरियाणा
पंचकूला

साहिल ने मनवाया प्रतिभा का लोहा

रेवाड़ी जिले के गाँव खोरी स्थित राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के मेधावी छात्र साहिल ने बिना किसी कोचिंग के अपने विद्यालय के मार्गदर्शन से आईआईटी एडवांस में अनुसूचित वर्ग में 3301 रैंक लेकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है।

साहिल खोरी के निकट रेवाड़ी जिले के गाँव बवाना गुर्जर का निवासी है तथा उसके पिता चंद्रभान मजदूरी करते हैं, माता सुनीता देवी गृहिणी हैं। खोरी के सरकारी स्कूल में साहिल ने नवीं कक्षा में दाखिला लिया था तथा गत चार वर्षों से वह निरंतर विद्यालय की विभिन्न विज्ञान आधारित गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं में विद्यालय का जिला एवं राज्य स्तर पर प्रतिनिधित्व कर चुका है। विद्यालय के डॉ. सीवी रमन साइंस क्लब की गतिविधियों में निरंतर सक्रिय रहने वाले साहिल प्रतिदिन बाल सभा में पूछे जाने वाले आज के सवाल के सर्वाधिक उत्तर देने वाला छात्र रहा। विद्यालय ने उसकी प्रतिभा को देखते हुए एक ओर जहाँ बुक बैंक से उसे सभी प्रतियोगी पुस्तकें प्रदान कीं, वहीं उसे निरंतर विद्यालय की हर क्विज में शामिल करके प्रेरित एवं प्रोत्साहित किए रखा। हाल ही में घोषित आईआईटी एडवांस के परीक्षा परिणाम में उसने 3301 वाँ रैंक हासिल करके विद्यालय और जिले को गौरवान्वित करवाया। जिले के उपायुक्त यशेंद्र सिंह ने इस उपलब्धि के लिए साहिल को सम्मानित करते हुए विद्यालय की विज्ञान संकाय तथा प्राचार्य को बधाई दी। जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार तथा खंड शिक्षा अधिकारी महेंद्र सिंह खनगवाल ने साहिल की सफलता को सरकारी स्कूलों के बदलते शैक्षणिक प्रतियोगी माहौल के लिए प्रेरणापुंज बताया है। विद्यालय के प्राचार्य टेकचंद का मानना है कि यह सफलता विद्यालय की विज्ञान संकाय के सभी प्राध्यापकों, विद्यालय परिवार तथा साहिल के साधना व समर्पण का प्रतिफल है। विद्यालय के स्टाफ ने साहिल को 17,500 रुपए की प्रोत्साहन राशि देकर विशेष रूप से सम्मानित किया।

सत्यवीर नाहड़िया
प्राध्यापक रसायनशास्त्र
राआवमा विद्यालय खोरी, रेवाड़ी, हरियाणा

निपुण हरियाणा से निपुण भारत

निपुण भारत का सपना, सब बच्चे समझें भाषा और गणना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए 5 जुलाई 2021 को भारत सरकार में तत्कालीन केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने नेशनल इनिशिएटिव फॉर प्रोफिसिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमरेसी यानी निपुण भारत मिशन की शुरुआत की । इस पहल को आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता ज्ञान (फाउंडेशन लिटरेसी एंड न्यूमरेसी) की प्रतिबद्धता को प्राप्त करने की दिशा में बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस योजना का मुख्य लक्ष्य देश भर में ग्रेड-3 के अंत तक सभी बच्चों के साक्षरता व संख्यात्मक ज्ञान को बढ़ावा देकर उन्हें वर्ष 2026-27 तक पढ़ने, लिखने व अंकगणित की क्षमता प्राप्त करने के योग्य बनाना है, जिससे बच्चे सफलतापूर्वक बुनियादी कौशल प्राप्त कर भविष्य में आगे के शैक्षिक पाठ्यक्रमों को आसानी से समझ सकें। सरकार द्वारा जारी इस योजना को सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में लागू कर छात्रों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास किया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में राज्यों की महत्त्वपूर्ण भूमिका एवं उत्तरदायित्वों को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने पंचकूला में 30 जुलाई, 2021 को औपचारिक रूप से हरियाणा प्रदेश के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का लोकार्पण किया। लोकार्पण समारोह में मुख्यमंत्री ने उपस्थित जनों व ऑनलाइन माध्यम से जुड़े शिक्षाविदों और विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा प्रदेश जिस प्रकार खेलों में निपुण है, उसी प्रकार शिक्षा में भी हरियाणा को अग्रणी बनाना है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके छात्रों को ज्ञान, कौशल और मूल्यों के साथ सशक्त बनाने के उद्देश्य से हरियाणा में नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए आधारभूत ढाँचा पहले से ही तैयार किया जा चुका है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में शामिल आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता ज्ञान (फाउंडेशन लिटरेसी एंड न्यूमरेसी) को वर्ष 2025 तक पूरी तरह प्राप्त करने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाते हुए इसी कार्यक्रम में मुख्यमंत्री महोदय द्वारा निपुण हरियाणा मिशन का शुभारंभ भी किया गया। निपुण हरियाणा मिशन की समय अवधि को ध्यान में रखते हुए तथा योजना को मूर्त रूप प्रदान करने हेतु मौलिक शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा 28 सितम्बर से 2 अक्टूबर, 2021 तक कुरुक्षेत्र में राज्य स्तरीय पाँच दिवसीय आवासीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के पहले दिन का आयोजन भरतमुनि नाट्यशाला में किया गया जिसका उद्घाटन निदेशक मौलिक शिक्षा विभाग डॉ. अंशज सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में पहुँचकर किया। निदेशालय से उनके साथ सहायक निदेशक नंदकिशोर वर्मा एवं कार्यक्रम अधिकारी प्रमोद कुमार शर्मा भी कार्यक्रम में पधारे। कार्यशाला में प्रदेश भर के 140 अध्यापकों का 'रिसोर्स पर्सन्स' के रूप में चयन किया गया जो आगे चलकर प्राथमिक अध्यापकों को इस कार्यक्रम के बारे में प्रशिक्षित करने का कार्यभार सँभालेंगे। इसके अतिरिक्त कार्यशाला के पहले दिन प्रदेश के ग्यारह जिलों (हिसार और गुरुग्राम मंडल) के जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी तथा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्यों ने भी प्रतिभागिता की। कार्यशाला के प्रारंभिक सत्र में कार्यक्रम अधिकारी ने आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता ज्ञान (फाउंडेशन लिटरेसी एंड न्यूमरेसी) के बारे में विस्तार सहित अपनी प्रस्तुति पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से दी। जिसका सार रूप इस प्रकार हैं-

आधारभूत साक्षरता तथा संख्यात्मकता-

आधारभूत साक्षरता तथा संख्यात्मकता उस कौशल तथा रणनीति को कहते हैं जिसके माध्यम से छात्र पढ़ने, लिखने बोलने और व्याख्या करने में सक्षम होते हैं। आधारभूत साक्षरता भविष्य में शिक्षा प्राप्त करने का आधार बनती है। वह सभी बच्चे जो कक्षा तीन तक आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक कौशल प्राप्त करने में सफल रहते हैं उन्हें आने वाली कक्षाओं के पाठ्यक्रम को पढ़ने में आसानी होती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए शिक्षा मंत्रालय द्वारा निपुण भारत योजना का शुभारंभ किया गया है। निपुण भारत एवं निपुण हरियाणा के माध्यम से आधारभूत साक्षरता तथा संख्यात्मकता को तीसरी कक्षा के छात्रों के अंतर्गत विकसित किया जाएगा। जिससे कि आने वाले समय में उनको शिक्षा प्राप्त करने में किसी भी बाधा का सामना न करना पड़े।

मूलभूत संख्यात्मकता और गणित कौशल-

मूलभूत संख्यात्मकता एवं गणित कौशल का अर्थ होता है दैनिक जीवन की समस्याओं का समाधान करने में तर्क करने और संख्यात्मकता अवधारणा को लागू करने की क्षमता। छात्रों के अंदर संख्या बोध एवं स्थानीय समझ तब विकसित होती है, जब वे निम्नलिखित कौशल प्राप्त कर लेते हैं-

मात्रा सम्बन्धी समझ

- कम या ज्यादा एवं छोटा या बड़ा की समझ विकसित करना
- एकल वस्तु एवं वस्तुओं के समूह के बीच संबंध स्थापित करने की क्षमता
- मात्राओं का प्रतिनिधित्व करने वाली प्रतियों का उपयोग करना, संख्याओं की तुलना करना, आदि

प्रारंभिक गणित के प्रमुख घटक-

पूर्व संख्या अवधारणाएँ, नंबर एंड ऑपरेशन ऑन नंबर, गणितीय तकनीकें, मापन, आकार एवं स्थानिक समाज, पैटर्न, डाटा संधारण, गणितीय संचार।

नेशनल मिशन का प्रशासनिक संचरण-

निपुण भारत मिशन- डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एजुकेशन एंड लिटरेसी एवं मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन राष्ट्रीय स्तर पर इस योजना का संचालन करेगी। नेशनल मिशन के अंतर्गत कई प्रकार के कार्य किए जाएँगे, जैसे कि मिशन की स्ट्रेटजी डॉक्यूमेंट बनाना, फ्रेमवर्क बनाना, लर्निंग मैट्रिक्स तैयार करना, लर्निंग गैप्स को पहचानना, शिक्षकों की क्षमता को बढ़ाना आदि।

निपुण हरियाणा मिशन- डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एजुकेशन के अंतर्गत इस योजना के अंतर्गत स्टेट मिशन का संचालन किया जाएगा। जिसके लिए एक स्टेट स्टीयरिंग कमेटी का गठन किया जाएगा।

डिस्ट्रिक्ट मिशन- इस योजना के संचालन के लिए डिस्ट्रिक्ट स्टीयरिंग कमेटी का गठन किया जाएगा। जो कि डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट या फिर डिप्टी कमिश्नर द्वारा हेड की जाएगी। इस कमेटी के सदस्य सीईओ, जिला परिषद, डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन ऑफिसर, डिस्ट्रिक्ट ऑफिसर फॉर हेल्थ, पंचायती राज, सोशल वेलफेयर ऑफिसर आदि होंगे।

ब्लॉक क्लस्टर लेवल मिशन- निपुण योजना का कार्यान्वयन ब्लॉक लेवल पर भी किया जाएगा। ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर एवं ब्लॉक रिसोर्स पर्सन के द्वारा इस योजना का मार्गदर्शन एवं समर्थन प्रदान किया जाएगा।

क्लस्टर लेवल मिशन- निपुण योजना का कार्यान्वयन क्लस्टर लेवल पर भी किया जाएगा।

स्कूल मैनेजमेंट कमेटी एंड कम्युनिटी पार्टिसिपेशन- निपुण योजना के कार्यान्वयन के लिए प्रशासनिक संचालन का अंतिम लेवल स्कूल मैनेजमेंट कमेटी एवं कम्युनिटी पार्टिसिपेशन है। इस योजना का कार्यान्वयन स्कूल एवं कम्युनिटी लेवल पर जागरूकता फैलाकर किया जाएगा। जिससे कि बच्चों के अभिभावक, शिक्षा एवं संपूर्ण स्कूल मैनेजमेंट इस योजना का सफलतापूर्वक संचालन कर सके।

निपुण भारत योजना के हितधारक-

राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश, नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन, केंद्रीय विद्यालय संगठन, स्टेट काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग, डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन ऑफिसर एवं ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर, ब्लॉक रिसोर्स सेंटर तथा क्लस्टर रिसोर्स सेंटर, हेड टीचर, नॉन गवर्नमेंट ऑर्गेनाइजेशन, सिविल सोसायटी ऑर्गेनाइजेशंस, स्कूल मैनेजमेंट कमेटी, वॉलिंटियर, कम्युनिटी एवं पेरेंट्स, प्राइवेट स्कूल ।

इस प्रस्तुति के पश्चात कार्यशाला में प्रतिभागिता कर रहे रिसोर्स पर्सन्स को प्रशिक्षण देने का कार्य तीन संस्थाओं जिनमें लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, संपर्क फाउंडेशन, सैंट्रल स्क्वेयर फाउंडेशन शामिल थी, ने संभाला। हालाँकि निपुण भारत मिशन में जहाँ हिंदी और गणित विषय को ही शामिल किया गया, वहीं निपुण हरियाणा मिशन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी विषय के

महत्त्व को ध्यान में रखते हुए हिंदी और गणित विषय के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा के कौशलों और दक्षताओं को विकसित करने पर भी बल देता है। प्रशिक्षण प्रत्येक दिन चार सत्रों में था, जोकि सुबह के 9:30 से प्रारम्भ होकर रात्रि के 8:30 तक चलता था। पहले दिन के दोपहर बाद के सत्र में सैंट्रल स्क्वेयर फाउंडेशन की ओर से संभ्रांत जी ने कार्यशाला के उद्देश्य एवं पाँच दिवसीय कार्य योजना को प्रतिभागियों के सम्मुख रखा। अगले सत्र में एफएलएन हरियाणा की पृष्ठभूमि, शिक्षकों की भूमिका पर चर्चा की गई।

कार्यशाला के दूसरे दिन कार्ययोजना को आगे बढाते हुए प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभाजित किया गया। जहाँ बारी-बारी से तीनों समूहों को तीन अलग-अलग विषयों का प्रशिक्षण दिया जाना था। हिंदी विषय के सत्र का संचालन लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन के रिसोर्स पर्सन अलीमुद्दीन एवं निधि काजी द्वारा किया गया। इस सत्र में मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग, डिकोडिंग में शामिल उप कौशल, वर्ण पहचान, अक्षर जोड़कर शब्द बनाना और पढना, अपरिचित लिपि के माध्यम से डिकोडिंग सिखाने की प्रक्रिया की चुनौतियाँ समझना आदि अवधारणाओं पर विमर्श किया गया।

बुनियादी संख्यात्मक और गणित कौशल के सत्र का संचालन सम्पर्क फाउंडेशन के रिसोर्स पर्सन रविकांत जी द्वारा किया गया। बुनियादी गणित के इस सत्र में संख्या अवधारणा, संख्या प्रणाली, संख्याओं पर संचालन, तीन अंकों तक की संख्याओं पर जोड़, घटाव, गुणा और भाग, दैनिक जीवन की गतिविधियों में सूचना की व्याख्या आदि उपविषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। इसी तरह अंग्रेजी विषय के सत्र को सम्पर्क फाउंडेशन की रिसोर्स पर्सन श्वेता पॉल द्वारा संचालित किया गया।

उपर्युक्त सत्रों में प्रतिभागियों की सहभागिता सुनिश्चित करने तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम को रोचक एवं आकर्षक बनाने के लिए प्रत्येक सत्र में संसाधन व्यक्तियों द्वारा बाल केन्द्रित एवं मनोवैज्ञानिक गतिविधियों को भी व्यवहार में लाया गया और यह अपेक्षित भी था, क्योंकि आगे चलकर इन्हीं गतिविधियों को कक्षा-कक्षों में आयोजित किया जायेगा। प्रशिक्षुओं की अवधारणाओं से सम्बन्धित समझ को विकसित करने के लिए प्रत्येक सत्र के आरम्भ में प्री-टेस्ट तथा सत्र की समाप्ति पर पोस्ट टेस्ट प्रावधान रखा गया था।

कार्यशाला के चौथे दिन निदेशक, मौलिक शिक्षा विभाग हरियाणा डॉ. अंशज सिंह जी ने पुनः प्रतिभागियों की प्रतिपुष्टि लेने एवं मार्गदर्शन करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दी तथा प्रतिभागियों के प्रश्नों और शंकाओं का समाधान भी किया।

कार्यक्रम के अंतिम और पाँचवे दिन पिछले चार दिन के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुभवों को सभी प्रतिभागियों के छोटे-छोटे समूह बनाकर साझा किया गया और इस आशा और विश्वास के साथ सभी ने विदाई ली कि इस आदर्श वाक्य को चरितार्थ करने का प्रयास करेंगे-'सीखने का एक जुनून रहेगा, सीखने से न कोई दूर रहेगा।'

सुनील कुमार
हिंदी प्राध्यापक
राआसंव माध्यमिक विद्यालय
इस्माईलाबाद, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

मधुर यादें छोड़ गया मोरनी नेचर कैंप

डॉ. ओमप्रकाश कादयान

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख पर्यटक स्थल देखने व घूमने लायक हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। वहाँ के हरे-भरे व गहरे जंगल, झरने, नदियाँ, ग्लेशियर, घाटियाँ, वादियाँ, आसमान छूते पहाड़, खेत-खलिहान व धार्मिक, ऐतिहासिक स्थल सब पर्यटकों को इतना लुभाते हैं कि वर्ष भर यहाँ पर्यटकों की भीड़ रहती है। खासकर गर्मियों में इतने पर्यटक हो जाते हैं कि पर्यावरण को भी नुकसान पहुँचने लगता है। ज्यादातर पर्यटक प्रकृति व पर्यावरण के प्रति लापरवाह ही होते हैं। वे प्रकृति की सुंदरता को निहारना, उसका आनंद उठाना तो जानते हैं, किंतु उसके संरक्षण व स्वच्छता की उन्हें कोई परवाह नहीं होती। यही कारण है कि प्राकृतिक सौंदर्य से सरोबार पहाड़ों की शांति व सौंदर्य पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। ये शुक्र है कि हिमाचल प्रदेश के साथ लगती मोरनी के पहाड़ अभी अधिक शोर-शराबे व प्रदूषण से बचे हुए हैं। मोरनी इलाके के पहाड़ हिमाचल के पहाड़ों की तरह अधिक ऊँचे या बर्फ से तो नहीं ढके हुए हैं, किंतु ये पहाड़ हिमाचल की वादियों का एहसास अवश्य करवाते हैं। हिमाचल की तरह यहाँ हरे-भरे गहरे जंगल हैं, सीढ़ीदार खेत हैं। उनसे मिलती-जुलती संस्कृति है। कम पानी की ही सही छोटी-छोटी कई नदियाँ-नाले भी हैं तथा वर्ष भर न सही, किंतु बरसात के मौसम में यहाँ अनेक झरने भी देखे जा सकते हैं। कई तरह के जंगली जानवर

व विभिन्न प्रकार व रंगों के पक्षी भी यहाँ हैं। सूर्योदय व सूर्यास्त के दृश्य यहाँ भी अद्भुत नजारा प्रस्तुत करते हैं। हरियाणा में रहकर भी बड़ी संख्या में लोग ये नहीं जानते कि हरियाणा में भी हिमाचल, उत्तराखंड व कश्मीर जैसे पहाड़ व मन मोह लेने वाला सौंदर्य है। सरकारी विद्यालयों में मैदानी भागों में पढ़ रहे विद्यार्थियों को तो शायद बहुत ही कम पता है मोरनी हिल्स व इस इलाके के बारे में। शिक्षा विभाग ने शायद यही महसूस किया होगा कि हमारे विद्यार्थियों को इस इलाके के बारे में जानकारी हो तथा वे इस इलाके को अपनी आँखों से देख सकें, हरियाणा पर गर्व कर सकें तथा बहुत कुछ सीखने का अवसर भी उन्हें मिले। इसलिए मोरनी में पिछले वर्ष से तथा मल्लाह में पिछले कई वर्षों से हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग की ओर से एडवेंचर कैंपों का आयोजन शुरू किया है। मोरनी के साथ अबकी बार मोरनी से करीब 4 किलोमीटर पहले भूड़ी गाँव के निकट पहाड़ की चोटी पर स्थित मोरनी नेचर कैंप स्थल पर एडवेंचर कैंप का आयोजन किया गया। जगह के हिसाब से ये एक खूबसूरत निर्णय कहा जा सकता है। मुझे भी मोरनी नेचर कैंप जाने का अवसर मिला। शिक्षा विभाग की ओर से जैसे ही एडवेंचर कैंप में जाने की सूचना मिली मैं तैयार हो गया। मोरनी व मल्लाह में जिला वार कैंप लग रहे थे। 25 से 29

अक्टूबर 2021 फतेहाबाद व भिवानी की बारी थी। भिवानी के बच्चे मल्लाह तथा फतेहाबाद के बच्चे मोरनी नेचर कैंप में जाने थे। जिला शिक्षा अधिकारी दयानंद सिहाग ने करीब 120 बच्चों व कुछ शिक्षकों के दल को 25 अक्टूबर को हरी झंडी दिखाकर मोरनी के लिए रवाना किया। दूसरी ओर करीब 60 दिव्यांग बच्चों को डीपीसी वेद सिंह दहिया ने बस में बिठा कर रवाना किया। इस कैंप में जाने वाले अधिकतर बच्चे शायद पहली बार घर से बाहर किसी सामूहिक टूर के लिए निकले थे। पहाड़ भी अधिकतर ने पहली बार देखे थे, इसलिए जब हमारी बस पंचकूला पार करके मोरनी के पहाड़ों पर चढ़ने लगी तो बच्चों का उत्साह देखने लायक था। बच्चे ऊँचे-नीचे, घुमावदार, खतरनाक-से रास्तों, ऊँचे पहाड़ों, गहरी खाइयों, पहाड़ी जंगलों, पहाड़ों की ढलानों पर बने घरों को कौतूहल, उत्सुकता व आश्चर्य के साथ देख रहे थे। हो सकता है कि कुछ बच्चों के मन में ऊँचाई के प्रति थोड़ा बहुत भय हो, किंतु सभी को बहुत अच्छा लग रहा था। सभी विद्यार्थी खुश थे। बतिया रहे थे, कुछ बस की खिड़की से फोटो ले रहे थे। कुछ चढ़ाई के उपरांत पतंजलि द्वार आया। बाबा रामदेव ने जड़ी-बूटियाँ उगाने, औषधीय खेती करने के लिए सैकड़ों एकड़ भूमि ली हुई है। मोरनी के ये पहाड़ जड़ी-बूटियों का खजाना हैं। हम उनका उपयोग कितना कर पाते हैं ये बात अलग है। करीब 35-36 किमी का पहाड़ी सफर तय करने के बाद हम करीब चार बजे भूड़ी गाँव पहुँचे। बस से मुख्य सड़क पर उतर कर, अपने-अपने बैग लेकर, 8-10 मिनट की पैदल चढ़ाई के बाद हम सभी मोरनी नेचर कैंप पहुँचे। पहाड़ की चोटी पर बनी कैंप साइट पहुँच कर सबको अच्छा लग रहा था। सुहानी धूप, चारों ओर चीड़ के पेड़ हवा संग मिलकर बाँसुरी बजा रहे थे, ठंडी-सी हवा गुनगुना रही थी, पंछी जैसे प्रकृति का गीत गा रहे थे। दाईं ओर सती माता का मंदिर तो बाईं और सुंदर टैंटों की कई कतारें जिनमें विद्यार्थियों को रुकना था। यहाँ आकर टैंटों में रहना नया व अलग तरह का अच्छा अनुभव था। आजकल यात्राओं के दौरान बड़े-बड़े होटलों की बजाय पर्यटक टैंटों में रहना ज्यादा पसंद करते हैं। उसके लिए चाहे किराया होटलों से दो-तीन गुणा अधिक देना पड़े। बच्चों का खाना तैयार था। खाना खाया। टेंट अलॉट किए, कैंप के नियमों के बारे में बताया गया। हरियाणा शिक्षा विभाग के कार्यक्रम अधिकारी तथा इस एडवेंचर कैंप की रूपरेखा तैयार करने वाले रामकुमार ने बच्चों को संबोधित किया। आवश्यक बातें बताई। कैंप आयोजनों के उद्देश्य पर प्रकाश डाला तथा कैंप आयोजन का उद्घाटन किया। फिर सभी को कुछ देर के लिए खाली छोड़ दिया गया ताकि वो प्रकृति को निहार सकें, उसे समझ सकें। मोरनी नेचर कैंप साइट संभवतः मोरनी इलाके की एक खूबसूरत जगह है। अधिक ऊँचाई पर होने के नाते यहाँ से चारों ओर दिव्य नजारे दिखते हैं। पूर्व में मोरनी हिल्स, गाँव, उत्तर में हरी-भरी वादियाँ, ऊँचे-नीचे पहाड़, घग्घर नदी, सीढ़ीदार खेत तथा हिमाचल के ऊँचे पहाड़ दिखाई

देते हैं। दक्षिण में एक तरफ पहाड़ों की कतारें, कई गाँव के दृश्य, तीन-चार झीलें जो यहाँ के किसानों व गाँव वालों के लिए जलस्रोत के साधन हैं। पश्चिम में गहरी खाइयाँ, पहाड़ों की तलहटी में बसे गाँव, कम ऊँचाई वाले पहाड़ों पर बनी बस्तियाँ तथा बरवाला के गाँवों के दृश्य, छोटे पहाड़ों के ऊपर से जीरकपुर, पंचकूला व चंडीगढ़ की इमारतें तथा चंडीगढ़ की सुखना झील का सुंदर नजारा यहाँ से दिखता है। विद्यार्थी ये सब देख-देख खुश व उत्साहित थे। अब सूरज देवता रात के विश्राम की तैयारी में था, इसलिए शनैः शनैः जैसे रंग बदलता हुआ नीचे खिसकता दिख रहा था, नभ की लालिमा बढ़ रही थी। चीड़ के पेड़ों के झुरमुट से सूर्यास्त का दृश्य अति आकर्षक व यादगार बनता जा रहा था। जैसे किसी दक्ष चित्रकार ने कैनवस पर संतरी रंग बिखेर कर काले रंग से पेड़ों की परछाई बना दी हो। बीच में किसी मीठे फल-सा सूरज का गोला, उसके आगे से उड़ते पंछियों के झुंड, दृश्यावली को और भी आकर्षक बना रहे थे। सूरज जैसे-जैसे नीचे जा रहा था, भास्कर की रक्त-रश्मियाँ पेड़ों की टहनियों से पहाड़ों की चोटियों से गायब होकर नभ में छाए बादलों में समा कर, बादलों को स्वर्णिम आभा देने लगी। धीरे-धीरे जैसे सूरज ने अपने रंग बादलों से भी समेट लिए हों तथा रात भर के लिए गायब हो गया। पहाड़,

जंगल, बादल, गाँव, खेत क्यार, नगर सब अंधेरे के आगोश में जाने लगे। सभी दृश्यावली गायब होती, नजर से ओझल हो रही थी, किंतु दूसरी ओर अंधेरे से लाखों लाइटें जलती नजर आने लगीं। पंचकूला, जीरकपुर व चंडीगढ़ का रात का नजारा किसी चमत्कार से कम नहीं लग रहा था। ऊँचाई से रात को लाइटों की झमाझम ये एक ऐसा नजारा था जो हमें शिमला या मनाली में भी रात को दिखाई नहीं देता। दूसरी ओर पहाड़ों पर कितनी बस्तियाँ बसी हैं ये हमें रात को पता चला, जब सब कुछ रोशन होने लगा। उधर आसमान की ओर देखा तो और भी अच्छा लगा, प्रदूषण रहित साफ आसमान में तारे अधिक चमक रहे थे। चाँद जैसे आज बरसात में नहा-धोकर अधिक चमकीला होकर आया हो। अब ठंड बढ़ गई थी। सभी ने अपनी जैकेट, जर्सी, शाल आदि सँभाले। खाना लग गया था। खाने के बाद कैंप फायर की तैयारी शुरू हुई। लंबे सफर से बच्चे आने के कारण आज सांस्कृतिक उत्सव छोटा रखा तथा समय पर सभी को सोने के आदेश मिले।

सुबह पाँच बजे सभी बच्चे व शिक्षक उठ गए। जो नहीं उठे वे उठा दिए गए। उधर छह बजे बच्चों का योगा व व्यायाम आरंभ हुआ, दूसरी तरफ पूर्व में हुआ उजाला सूरज निकलने के संकेत। कुछ देर में पर्वतों से, पेड़ों के झुरमुटों से छनती हुई सूरज की रोशनी झाँकती दिखाई दी। सूर्योदय का गजब का नजारा था, इसलिए इन पलों के दिव्य मंजर को मैंने कैमरे में कैद किया। दूसरी तरफ पर्वतांचल के बहुरंगी पक्षी जंगल का गाना गाने लगे। छोटे-बड़े रंगीन पक्षी हमारे आसपास चहचाने लगे। मैंने उन्हें कैमरे में उतारना चाहा। कोई भोजन की तलाश में, कोई धूप सेकने-सैकड़ों पक्षी नजर आए। पेड़ों के झुंडों से जंगली मुर्गों की आवाज सुनाई दी। थोड़ी देर बाद दूर के कुछ बड़े पेड़ों पर 50-50, 60- 60 के झुंडों में छोटे तोते बैठे, उड़ते, चहचाते दिखाई व सुनाई दे रहे थे। हरी, काली, भूरी, मटमैली, पीली, गुलाबी, संतरिया, बहुरंगी चिड़ियाँ व अन्य पक्षी नजर आए तो खुशी हुई कि अभी यहाँ ढेर सारे पक्षी बचे हुए हैं। वैसे भूड़ी के एक बुज़ुर्ग ने बताया कि आज से 40-50 वर्ष पूर्व जो सुंदर पक्षी यहाँ दिखाई देते थे उनमें से बहुत से लुप्त हो गए, कुछ अपनी जगह छोड़ गए, कुछ पक्षी मोबाइल टावर से खत्म हो गए। उन्होंने बताया कि कुछ नए पक्षी भी दिखाई दिए हैं जो पहले नहीं देखे थे। ये अच्छी बात है। किंतु खत्म होने वाले पक्षियों की संख्या अधिक है। पहले इससे अधिक पक्षी दिखाई देते थे। उन्होंने बताया कि पहले हमारे मकान लकड़ी के होते थे तो पक्षी हमारे आस-पास रहते थे। बहुत से पक्षी घरेलू जैसे ही थे। हमारे साथ हमारे मकानों में घोंसला बना कर रहते थे। अब मकान ईंट-सीमेंट के होने लगे तो पक्षी हमसे दूर हो गए।

जरूरी कामों से निपट, सुबह का नाश्ता कर 9 बजे ट्रेकिंग के लिए रवाना हुए। पहाड़ों की पगडंडियों से जंगल से गुजरते हुए जोड़ी गाँव के पास से मुख्य सड़क पार करके दाईं ओर की पहाड़ियों पर चलना शुरू किया। ऊँचे-नीचे रास्तों, खेतों, छोटी-छोटी बस्तियों से गुजरते हुए, पहाड़ी संस्कृति को जानते, देखते, समझते हुए, फसलों का अवलोकन करते हुए, वहाँ के लोगों से मिलते हुए, बतियाते हुए हम आगे बढ़ते रहे। करीब 2 घंटे की ट्रैकिंग के बाद हम ऊँचे पहाड़ की एक चोटी पर बने प्राचीन सती मंदिर के पास गए। हमारी यात्रा टिकरी गाँव तक थी। असल में हमारा लक्ष्य किसी मंदिर में जाना नहीं बल्कि उस बहाने, ट्रैक पर निकलकर पहाड़ी संस्कृति को जानना, प्रकृति को नज़दीक से निहारना व समझना था। मंदिर के पास सबने आधा घंटा आराम किया। कुछ बच्चों ने गीत सुनाए, फिर वापसी पर कैंप साइट आकर दोपहर का भोजन कर, थोड़ा आराम कर के बच्चों को साहसिक गतिविधियाँ करवाई गई। ये गतिविधियाँ तन व मन को मजबूत बनाने का कार्य करती हैं, मनोरंजन भी करती हैं तथा हमें अनुभवी बनाती हैं। हमें जीवन से संघर्ष करना तथा मुसीबतों से लड़ना, जूझना, व सुलझना सिखाती हैं।

रात को धूम-धाम से सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों ने जोश व उत्साह के साथ अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस वक्त दिव्यांग बच्चों ने भी बेहतरीन प्रदर्शन किया। अगले दिन का ट्रैक कुछ अलग से था। सुबह करीब 9 बजे कैंप से रवाना हुए। लंबे व मुश्किल किंतु मजेदार ट्रैक के लिए। आज हमने लंबी व गहराई, उतराई से होते हुए घग्गर नदी के पास जाना था। रास्ते में पड़ने वाले बरसाती झरनों को निहारते हुए। जंगल के रास्ते में अनेक तरह के पक्षी,

तितलियाँ, जगह-जगह शिकार की ताक में जालों पर बैठी जंगली बड़ी मकड़ियों, जगह-जगह कैक्टस के बड़े-बड़े पौधे, जड़ी-बूटियाँ, सैकड़ों तरह के हजारों पेड़ देखने में आए। एक जगह हरे रंग का पतला व तीन-साढ़े तीन फुट का साँप मिला, एक पत्थर पर धूप सेक रहा था।

आगे चलने पर एक सूखे पेड़ पर छोटे आकार वाले 7-8 तोते बैठे थे। हमें देखते ही शोर मचाते हुए फुर्र से उड़ गए। करीब एक घंटे की उतराई के बाद सभी झरने के पास पहुचे। वहाँ जाकर बच्चों ने फोटो खींचे तथा सेल्फियाँ लीं। आजकल मोबाइल में सेल्फी के बिना फोटोग्राफी अधूरी-सी लगती है। बच्चे यहाँ पर करीब आधा घंटा रुके। खूब मनोरंजन किया। आगे बढ़ने पर एक छोटा सा झरना आया। इससे आगे चढ़ाई आरंभ हो जाती है। सड़क नहीं है, जंगल से गुजरती हुई पगडंडी है, जो यहाँ के निवासियों ने आने-जाने के लिए बना रखी है। बताते हैं कि रात को लोग इस पगडंडी का प्रयोग कम करते हैं क्योंकि रात को जानवरों का भय होता है। तेंदुए रात को शिकार की तलाश में यहाँ घूमते हैं। उन्हें हिरण, चीतल, नीलगाय, सियार, जंगली मुर्गे, जंगली सूअर आदि मिल जाते हैं। हालांकि तेंदुए यहाँ मनुष्यों पर हमला नहीं करते। कोई भी घटना यहाँ ऐसी नहीं होती कि किसी तेंदुए ने किसी आदमी पर आक्रमण किया हो।

ये सफर कठिन था, क्योंकि जगह-जगह खड़ी चढ़ाई थी, वो भी लंबे सफर की, किंतु रोचक थी इसलिए बच्चे उत्साह व हिम्मत के साथ हँसते-बोलते, गाते-गीत सुनाते चलते रहे। इनमें से अधिकतर ने ये गहरे जंगल पहली बार देखे थे। वैसे भी प्रकृति की गोद में आकर मनुष्य तनाव रहित हो जाता है। ग्रुप में तो और भी मजा आता है। वैसे भी प्रकृति हमें बहुत कुछ सिखाती है त्याग, समर्पण, संघर्ष, जीवंतता, हर स्थिति में खुश व संतुष्ट रहना, दूसरों के लिए जीना। प्रकृति सबसे बड़ी शिक्षक, सबसे श्रेष्ठ चित्रकार, सबसे महान दार्शनिक व सब की माँ है। इसलिए हम प्रकृति से बहुत कुछ सीखते व पाते हैं। हमारा पूरा शरीर ही प्रकृति की देन है। आज इस दूर पर इस ऊबड़-खाबड़, टेढ़ी-मेढ़ी, पगडंडी की दुर्गम यात्रा थी। बच्चे बहुत कुछ सीख रहे थे। हम जिस रास्ते से आए तो वापस उस रास्ते से नहीं जा रहे थे, बल्कि घूमते हुए आगे ही बढ़ रहे थे। काफी देर बाद हम ऊपर आए तो सब को अच्छा लगा। यहाँ एक मकान में बच्चों ने पानी पिया, कुछ आराम किया फिर भूड़ी गाँव होते हुए वापस कैंप साइट पर आए। सभी ने दोपहर का खाना खाया। दोपहर बाद एडवेंचर गतिविधियाँ आरंभ हुईं, रात को सांस्कृतिक धमाल। अगले दिन बचे हुए कुछ पर्यटन स्थल देखने की तैयारी।

अगले दिन पानीपत से विशेष गेस्ट के रूप में आई फर्स्ट एड की प्राध्यापिका रोहिणी ने सुबह आठ से साढे नौ बजे तक बच्चों को फर्स्ट एड की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। दिन भर बची हुई गतिविधियाँ व पेंटिंग, मेहँदी, रंगोली प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। रात को फिर सांस्कृतिक उत्सव जो उत्साह व ऊर्जा से परिपूर्ण था। आखिरी दिन 29 अक्टूबर को सुबह के खाने के बाद बच्चों का सम्मान समारोह आयोजित हुआ। पर्वतारोही व शिक्षाविद रोहिणी तथा कैंप कोऑर्डिनेटर होने के नाते मैंने सभी बच्चों व शिक्षकों को प्रमाण-पत्र बाँटे तथा प्रतियोगिताओं के विजेता बच्चों को शिक्षा विभाग की ओर से स्मृति चिह्न प्रदान किए। यात्रा-वृत्तांत लेखन में उर्मिला, मेहंदी में चंचल सुथार, रंगोली में पायल, पेंटिंग में अमनप्रीत को पुरस्कार दिए। इसके साथ नेहा को बेस्ट डांसर, रिया, शैलेंद्र, आकाश को बेस्ट कैंपर का अवार्ड दिया। कुसुम, रेखा, कार्तिका, शालू को नृत्य में अवार्ड दिया गया।

बस तैयार थी वापसी के लिए। बच्चों ने पहले ही अपने बैग तैयार किए हुए थे। सम्मान समारोह के बाद बच्चों ने अपने-अपने बैग उठाए तथा भारी मन और नम आँखों से चलने की तैयारी की।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एमपी रोही
फतेहाबाद, हरियाणा

सरकार ने विकलांगों को दिव्यांग मानकर उन्हें पूरा मान सम्मान देने की कोशिश की है, पर अभी भी समाज में उनको उचित सम्मान व स्थान नहीं मिलता। जिसके वे अधिकारी हैं। ऐसा लगता है जैसे दुनिया उनकी पहुँच से बाहर हो। कुछेक दिव्यांगों की तो छोटी-छोटी अभिलाषाएँ, उदाहरण के तौर पर पढ़ना, स्कूल जाना, साथियों के साथ खेलना, पूजा-अर्चना करना, शादी करना, घर बसाना आदि भी पूरी नहीं हो पाती हैं। मानव अधिकारों के ज्ञान के अभाव व हनन के कारण देश के हजारों दिव्यांग पुरुष, महिलाएँ व बच्चे सार्वजनिक जीवन में हाशिये पर हैं। स्कूलों, कॉलेजों, खेतों, खेल के मैदानों, फैक्ट्रियों, सिनेमा हॉल, बाज़ारों, मंदिरों व पारिवारिक कार्यक्रमों में भी कम ही नज़र आते हैं या परिवार ही उन्हें नज़रअंदाज करता है। कौन जानने की कोशिश करता है कि उनके सपने क्या हैं। दिव्यांगों को अपने जीवन में असंख्य बाधाओं का सामना करना पड़ता है। सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों, पेयजल के स्रोतों व स्कूलों की दूरी उनके लिए मुश्किल का कारण बन जाती है। मंदिर भी ज्यादातर ऊँचे स्थानों पर स्थित होते हैं। कई जगह समाज का रवैया उनके प्रति ज्यादा मददगार नहीं होता। उनको दया का पात्र समझा जाता है। कई जगह कभी-कभी उन्हें मज़ाक का पात्र भी बनाया जाता है जिसके कारण उन्हें शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता है। अनेक के परिवार के सदस्य भी उनके प्रति पर्याप्त संवेदनशील नहीं होते। नतीजतन दिव्यांगों में अकेलेपन की भावना पनप जाती है। उन्हें ऐसा महसूस होता है कि वे दूसरों पर बोझ हैं जिससे उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है। इसके अलावा दिव्यांगों की शिक्षा की स्थिति भी शोचनीय है, क्योंकि सुदूर ग्रामीण इलाकों में कई स्कूलों में कई जगह न तो रैंप हैं, न विशेष वातावरण और न ही विशेष प्रशिक्षित अध्यापक हैं। जिन घरों में महिलाओं को मज़दूरी पर जाना पड़ता है वे अपने दिव्यांग लड़के-लड़कियों को पढ़ने ही नहीं भेजतीं, क्योंकि उन्हें अपने छोटे बहन-भाइयों का ध्यान रखना पड़ता है। उनकी देह तो अधूरी है पर आत्मा तो पूरी है। हमें दिव्यांगों को भी विकास व समृद्धि के समान अवसर प्रदान करने होंगे।

भूदत्त शर्मा
गाँव व डाकखाना- कोसली
जिला रेवाड़ी, हरियाणा

जिम्मेदारियों का अहसास करवाता आज़ादी का अमृत महोत्सव

सुमन मलिक

सैकड़ों वर्षों की लंबी दासता सहने के बाद आखिरकार भारत 15 अगस्त, 1947 को आजाद हुआ। विदेशी हुकूमत से छुटकारा पाने के लिए अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों ने लंबे समय तक संघर्ष किया और माँ भारती के चरणों में अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। यह आज़ादी हमें प्लेट में रखी हुई वस्तु की तरह सहजता से प्राप्त नहीं हुई है। इसके लिए हमारे पूर्वजों ने लम्बा संघर्ष किया है, अनेक बलिदान दिए हैं। माँ भारती के असंख्य सपूतों ने कुर्बानियाँ दी हैं तथा अनेक कष्ट, अमानवीय यातनाएँ व अत्याचारों को सहन किया है। अनेक बार जेल की यात्राएँ कीं और सलाखों के पीछे रहकर अपने सुख-चैन का त्याग किया है। अनेक वीरों ने हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चूमा और अपने प्राणों की आहुतियाँ दी हैं। उन सबका एक ही लक्ष्य था- भारत को आजाद कराना और आखिरकार लंबे संघर्ष और बलिदानों के बाद वे इसमें सफल हुए। आज देश आजाद है, हम स्वतन्त्रतापूर्वक विचरण कर रहे हैं, खुली आबो-हवा में साँस ले रहे हैं। हमारा गणतन्त्र है, हमारा शासन है, हमारे खुद के नियम-कायदे हैं, खुद का संविधान, विश्व में सुदृढ़ सबसे बड़ा लोकतंत्र है। परतन्त्रता से मुक्त होकर हम सब इस आज़ादी पर गर्व कर रहे हैं, इतरा रहे हैं। आज हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, हमारे धर्म, सभ्यता तथा संस्कृतियों को देश के स्वतंत्र वातावरण में फलने-फूलने तथा पल्लवित होने का अवसर प्राप्त हो रहा है। हम हर्षोल्लास के साथ आज़ादी के अमृत महोत्सव का जश्न मना रहे हैं।

आजाद भारत में पैदा हुए तीसरी पीढ़ी के लोग यह नहीं जानते कि आज़ादी क्या है? इसकी कीमत क्या है? इसके लिए कितना संघर्ष करना पड़ा? आज़ादी की पहली पीढ़ी ने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़ चढ़कर भाग लिया, संघर्ष को अपनी आँखों से देखा और आज़ादी के साक्षी बने। दूसरी पीढ़ी के लोगों ने आज़ादी के संघर्ष और बलिदान की गौरवशाली गाथाओं को सुना और महसूस करके आत्मसात् किया। तीसरी पीढ़ी के लोगों को आज़ादी के संघर्ष का तनिक भी आभास नहीं है। उन्होंने संघर्ष के बारे में आधी अधूरी जानकारी किताबों से पढ़कर हासिल की है। अनेक ऐसे भारत माता के वीर सपूत हैं जिनका इतिहास में कहीं भी उल्लेख नहीं है, पता नहीं क्यों उनके संघर्ष और कुर्बानियाँ को भुला दिया गया। हम उनके बारे में कुछ भी नहीं जानते।

देश की आज़ादी के संघर्ष की चिंगारी 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम से सुलगी जिसने धीरे-धीरे एक प्रचंड ज्वाला का रूप धारण किया। इस स्वतंत्रता संग्राम में मंगल पांडे, रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, वीर कुँवर सिंह, तात्या टोपे, नाना साहब, राव तुलाराम तथा बहादुर शाह जफर जैसे अनेक देशभक्तों ने अंग्रेजों को यहाँ से भगाने के लिए तलवार उठाई तथा देश को आजाद करवाने के लिए संघर्ष किया।

भारत की आज़ादी की कहानी लगातार संघर्षों और बलिदानों की गाथा है जिसमें असंख्य सेनानियों जैसे महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, लोकमान्य तिलक, सरदार पटेल, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, राजगुरु, चंद्रशेखर आजाद, डॉ भीमराव अंबेडकर आदि ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। आज़ादी के आंदोलन के नायक रहे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अनेक बार सत्याग्रह किया तथा जेल की यात्राएँ की। दांडी यात्रा, सहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन में सभी ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। ये जनता के आंदोलन थे जिनमें धर्म, सम्प्रदाय, जाति, वर्ग, क्षेत्रवाद, विचारधारा आदि संकीर्णताओं की बेड़ियों को तोड़ते हुए तथा अपने स्वार्थों को दरकिनार करते हुए जन-जन ने आज़ादी का बिगुल बजाया।

आज़ादी के 75 वर्षों के उपलक्ष्य में हम सब आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। यह अमृत महोत्सव उन देशभक्तों के बलिदानों की गौरव गाथाओं को जानने का पर्व है जिन्होंने देश को आज़ाद करवाने हेतु अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया था। जैसा कि विदित है 12 मार्च 1930 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने दांडी यात्रा से नमक सत्याग्रह की शुरुआत की थी। वर्ष 2020 में नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री मोदी ने साबरमती आश्रम से अमृत महोत्सव की शुरुआत पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर की। आज़ादी के 75 साल 15 अगस्त, 2022 को पूरे होने जा रहे हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए 75वीं वर्षगाँठ से एक साल पहले यानी 15 अगस्त, 2021 से आज़ादी के महोत्सव की शुरुआत गई है, जिसके अंतर्गत सम्पूर्ण भारत में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे। यह महोत्सव 15 अगस्त, 2023 तक चलेगा जिसमें आम जन की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।

हमारे पास गर्व करने के लिए बहुत कुछ है। अथाह

ज्ञान का भंडार, महान सांस्कृतिक विरासत, अनूठी परम्पराएँ, आध्यात्मिकता, वैसुधव कुटुम्बकम् तथा अनेकता में एकता की भावना, सत्य-त्याग-तपस्या का आत्मबल, वीर सपूतों की गौरवशाली गाथाएँ और विश्व का सबसे बड़ा सुदृढ़ लोकतंत्र है।

हमारा इतिहास पीड़ा एवं पराजय का नहीं संघर्ष और लोकमंगल की स्थापना का इतिहास है। हम शोकवादी नहीं उत्साहधर्मी संस्कृति के वाहक हैं। भारत का अतीत स्वर्णिम रहा है। विश्व को सर्वधर्म सद्भाव का पाठ पढ़ाया है। भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। भारत विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों का संगम स्थल है जिनको समान रूप से फलने-फूलने तथा पल्लवित होने का अवसर प्राप्त हुआ है। हम राम, कृष्ण, वाल्मीकि, गौतम बुद्ध, महावीर, नानक, सूरदास, तुलसीदास, रैदास आदि के जीवन मूल्यों का संवहन करने वाले सपूत हैं। पृथ्वीराज राज चौहान, राणा सांगा, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, संभा जी, वीर छत्रसाल, पेशवा बाजीराव, गुरु गोबिंद सिंह, शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि की संघर्षशाली परम्पराओं का निर्वहन करने वाले आत्मस्वाभिमानी व्यक्ति हैं।

आज़ादी के बाद भारत ने अनेक क्षेत्रों में अपनी पताका फहराई है तथा प्रतिष्ठा कायम की है। भारत अब किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। भारत ने अब तक सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य, खेल एवं तकनीकी क्षेत्र की विकास यात्रा में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है तथा नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। आज भारत की पहचान एक सशक्त राष्ट्र के रूप में है। यह अनायास नहीं हुआ। यह 130 करोड़ भारतवासियों की कड़ी लगन और मेहनत का प्रतिफल है। भारत के लोग विश्व में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं।

आज़ादी का अमृत महोत्सव हमें जिम्मेदारियों का अहसास करवाता है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सब आज़ादी के अमृत महोत्सव से जुड़ें, इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लें तथा देश के प्रति अपने संकल्पों को बार-बार जगाते रहें। इसमें आज़ादी के संघर्ष के यशोगान का अमृत है, स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणा लेने का अवसर है, नई ऊर्जा, नए संकल्पों तथा राष्ट्र के जागरण का उत्सव है, स्वराज्य के सपनों को पूरा करने का मौका है। भारत को वैश्विक शक्ति बनाने की नव उमंग, नव तरंग समाहित है।

इस महोत्सव में सभी विद्यालयों में अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे। आने वाला हरदिन, हरपल आज़ादी के रंगों में रँगा होगा जिसकी छटा चहुँओर बिखरी हुई दृष्टिगोचर होगी। आओ सब मिलकर उमंग, उत्साह, जोश के साथ आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाएँ।

गणित अध्यापिका
रावमा विद्यालय गढ़ी उजाले खां
खंड गोहाना, जिला सोनीपत, हरियाणा

हिंदी गृह-कार्य बनेगा रुचिकर

बच्चों के ऑनलाइन अध्ययन उपरान्त अब बच्चों के शीत अवकाश आने वाले हैं। बच्चों को किस प्रकार का गृह कार्य दिया जाए जिससे आप उनको दक्षताएँ भी सिखा पाएँ और पाठ्यक्रम का भी ध्यान रखें? आप अपने विषय का गृहकार्य देते समय नियत पाठ्यक्रम में से अभ्यास कार्य बनाकर दें।

आप कक्षावार व विषयवार बच्चों के स्तर को ध्यान में रखते हुए व निम्न बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए अपनी कक्षा को इस प्रकार गृहकार्य दे सकते हैं-

मौखिक व लिखित रूप से विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर देना, पाठ्यक्रम की मासिक बाँट अनुसार पाठ का चयन करें, पाठाधारित अधिगम योग्यताएँ, भाषायी कौशलों का विकास करना। कक्षा-1 चित्र, बारहखड़ी, बालगीत, शब्दों पर लगी मात्रा पहचान करना। कक्षा-2 'आपकी बात' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए प्रश्न लिखने का अभ्यास कराएँ जिससे अभिव्यक्ति का अवसर मिले। पढ़ी गई कहानी से मिलती-जुलती कहानी बनाएँ। कक्षा-3 आपकी बात शीर्षक के प्रश्नोत्तर लिखना, पहेलियाँ पढ़कर नई पहेलियाँ बनाकर लाने को कहें। कहानी पढ़कर उसे अपने शब्दों में लिखने को दिया जा सकता है। कक्षा-4 नए शब्दों के अर्थ लिखकर लाएँ, भाषा की बात हर पाठ के अंत में दी गई है जिसके अंतर्गत पाठाधारित व्याकरण कार्य को लिखकर लाने के लिए कहा जाए। कक्षा के स्तरानुसार दो देशों के त्योहारों की तुलना करवाई जा सकती है। कक्षा-5 व्याकरण आधारित अभ्यास कराने के साथ-साथ आपकी बात शीर्षक के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखने को दिए जाएँ। कहानी को पढ़कर समझना और अपने अनुसार कहानी का शीर्षक और कहानी का कोई और अंत भी हो सकता है। कक्षा 6-8 के लिए दिसंबर माह के पाठ्यक्रमानुसार आप अपने अनुभव लिखने के लिए दे सकते हैं। 'लोकगीत' पाठ के माध्यम से स्थानीय लोकगीतों के विषय में लिखने का काम दिया जाए जिससे बच्चा अपनी संस्कृति से परिचित तो होगा ही साथ ही समाज से भी जुड़ पाएगा। 'नौकर' पाठ के माध्यम से अपना काम स्वयं करने और साफ-सफाई से संबंधित दस आदतें लिखने को कहा जा सकता है।

पशु- पक्षियों के प्रति संवेदना जाग्रत करने के उद्देश्य से 'नीलकंठ' पाठ में मोर के रंग-रूप और स्वभाव पर अभिव्यक्ति का अवसर देते हुए कुछ लिखकर लाने को कहें। इसी प्रकार 'खानपान की बदलती तस्वीर' पाठ के माध्यम से बच्चों को घर का बना साफ स्वच्छ और पौष्टिक खाना खाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है और बहुत हद तक यह बच्चों को ज्यादा फास्ट-फूड खाने के नुकसान भी बता सकता है।

आठवीं कक्षा में 'जहाँ पहिया है' साइकिल चलाने को स्वावलंबन से किस प्रकार जोड़ा गया और बच्चों को भी स्वावलंबी किस प्रकार बनाया जाए इस पर अपने विचार लिखने का अवसर दें। व्यंग्यात्मक कहानी के पीछे व्यंग्य को समझकर स्वयं इसी प्रकार की किसी रचना का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित करें।

सीमा वधवा
कनिष्ठ विशेषज्ञ
एससीईआरटी हरियाणा, गुरुग्राम

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को गति देते हैं समूह गीत

प्रमोद कुमार दीक्षित

गीत जीवन्त समाज के परिचायक होते हैं। समाज-जीवन एवं लोक व्यवहार में गीत रचे-बसे हैं। समाज में धार्मिक संस्कारों का गीत अनिवार्य हिस्सा होते है। गीत बेजान नहीं होते, उनमें समय का स्पन्दन होता है। गीत हृदय से हृदय के मिलन का सुरीला सायुज्य पथ है। गीत मलय बयार का शीतल झोंका है। राग की मधुरिम सुखद यात्रा है। गीत स्वयं में खो जाने की, समाधिस्थ हो जाने की भावभूमि है। सुर, लय, ताल, आरोह-अवरोह और गीत बोलने की गायक कलाकार की एक विशेष शैली एवं भाव भंगिमा हर व्यक्ति को अपनी ओर खींचती है। गीत सबको पसन्द होते हैं। गीतों के माध्यम से किसी विषयवस्तु को सरलता से न केवल अभिव्यक्त किया जा सकता है बल्कि कहीं अधिक बोधगम्य भी बनाया जा सकता है। गीत वातावरण की नीरसता, एकरसता, ऊब, जड़ता और भारीपन को दूर कर सरस, समरस, उमंगित, गतिशील और उत्साही परिवेश का निर्माण करते हैं। व्यक्ति के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को गीत रोचक और ऊर्जावान बना देते हैं। गीत केवल शब्दों का कोरा समुच्चय भर नहीं है, बल्कि इनमें माटी की महक है, लोक की गमक है और सामाजिक प्रवाह का कलरव भी। ये समकालीन संस्कृति की धड़कन हैं, समाज और राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं। गीतों में खुशी, करुणा, स्नेह-प्रेम, आशा-विश्वास, ममता-समता, आत्मीयता, हर्ष, ललक, वात्सल्य, मिलन के मनोहारी चित्र अंकित हैं तो दुःख, दर्द, पीर, कसक, निष्ठुरता, निराशा, विषमता, अलगाव, आँसू , बिछोह भी प्रतिबिम्बित हैं। गीतों में अगर भौगोलिक सीमाएँ, नदी, तालाब, पर्वत, घाटी, जंगल, कोहरा, जाड़ा, गर्मी, वर्षा, पवन, फूल और पशु-पक्षी प्राणवान हो उठते हैं तो इतिहास भी अपने पात्रों, पुरा प्रस्तर औजारों, मुहरों-मुद्राओं, सन्धि-पत्रों, युद्धों और हार-जीत के साथ प्रत्यक्ष होने को लालायित हो उठता है। इतना ही नहीं फाग, होरी, चैती, बिरहा, सावनी, कजरी के साथ-साथ कहरई, कुम्हरई, धोबी, बैलही, दिवारी, उमाह आदि विभिन्न जाति समूहों के अपने-अपने गीत हैं, जिनमें उनकी जिजीविषा, पहचान, अस्तित्व एवं अस्मिता, गौरव-बोध और सांस्कृतिक वैभव समाया है। गीत राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की भावना को भी पुष्ट करते हैं। शैक्षिक गतिविधियों में भी गीत सहायक सामग्री के रूप में अपनी सशक्त भूमिका निर्वहन करते हैं। किसी गोष्ठी, समारोह में मुख्य वक्ता के पूर्व विषयवस्तु से जुड़े गीत की प्रस्तुति एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण कर वक्ता की अभिव्यक्ति संप्रेषणीयता में वृद्धि कर श्रोता समूह के ध्यानाकर्षण करने में समर्थ होती है।

शिक्षण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में गीतों का महत्त्व निर्विवाद स्वीकार्य है। यह देखने में आया है कि विद्यालयों का गम्भीर और अरुचिकर वातावरण बच्चों को न केवल शिथिल एवं थका देता है बल्कि उन्हें निस्तेज भी करता है। प्रातः विद्यालय में प्रवेश करते हुए उत्साह-उल्लास से भरे पूरे हँसते-खिलखिलाते फूल-से सुकोमल चेहरे घर जाते समय मुरझाये और निर्जीव-से दिखाई पड़ते हैं। इन 6-7 घण्टों में बच्चे विद्यालय में आनन्दरहित परिवेश में जीने को विवश होते हैं। वे समय-सारिणी के अनुकूल व्यवहार करने को मजबूर होते हैं। घण्टी बजती है, घण्टे बदलते हैं, विषय बदलते हैं, शिक्षक बदलते हैं लेकिन नहीं बदलता तो वह बच्चों को मुँह चिढ़ाता डरावना बोझिल वातावरण और पारम्परिक शिक्षण का तरीका। परिणाम स्वरूप बच्चे निष्क्रिय रहते हैं और उनका सीखना बाधित होता है। बालमन के पारखी कुशल शिक्षक कक्षा शिक्षण के दौरान माहौल को रुचिपूर्ण एवं आनन्ददायी बनाने के लिए बीच-बीच में प्रेरक चेतना गीतों का प्रयोग करके न केवल बच्चों का मन जीत लेते हैं बल्कि प्रस्तुत विषयवस्तु को उनके लिए सहज ग्राह्य बना देते हैं। हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब एक दिन तथा नन्हा मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ। बोलो मेरे संग जय हिंद, जय हिंद, जय हिंद। ये गीत किस प्रकार बालमनों में आशा और विश्वास का संचार करते हैं, किसी से छिपा नहीं है। इसी प्रकार प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी सत्रों के बीच-बीच में प्रशिक्षक द्वारा समूह गीतों

का प्रयोग करके प्रशिक्षण को जीवंत और सक्रिय बनाया जा सकता है। एक अच्छा प्रशिक्षक सम्बंधित विषय की भूमिका के रूप में उसी भाव एवं विचारों से ओतप्रोत गीत का सामूहिक गायन कर न केवल वातावरण तैयार कर लेता है बल्कि प्रतिभागियों का ध्यान आकृष्ट करते हुए अपना प्रभाव भी जमा लेता है। यदि हम बच्चों की पढाई, विद्यालय रखरखाव और अन्य क्रियाकलापों के सम्बन्ध में शिक्षकों, अभिभावको या विद्यालय प्रबन्ध समिति की बैठक आयोजित करें तो संवाद से पूर्व गीत का सामूहिक गायन वैचारिक वातावरण का निर्माण कर देता है, बच्चों की पढाई पर विचार होना चाहिए। जिसकी जिम्मेदारी उससे बात होनी चाहिए। या फिर, ले मशालें चल पड़े हैं लोग मेरे गाँव के। अब अँधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गाँव के।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- 2005 में विद्यालयीय परिवेश एवं कक्षा-कक्षों का वातावरण प्रजातांत्रिक, बाल मैत्रीपूर्ण तथा दण्ड एवं भयमुक्त बनाने पर बल दिया गया है। अपने शिक्षकीय जीवन में मेरा यह अनुभव रहा है कि खेलकूद, गीत-कहानी और बाल आधारित अन्यान्य शैक्षिक गतिविधियों/क्रियाकलापों के प्रयोग से विषयवस्तु की प्रस्तुति सरल हो जाती है जिसको बच्चे अर्थ समझते हुए ग्रहण करते हैं, स्वानुशासन के लिए प्रेरित होते हैं तथा कक्षा भी सक्रिय सजीव रहती है। बच्चों में आत्मविश्वास, मौलिक चिन्तन एवं कल्पना शक्ति का विकास होता है। शिक्षक भी प्रसन्न मन और उमंग से भरे रहते हैं। बच्चों के पढ़ना-लिखना सीख सकने में गीतों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी गीत में पिरोये वर्णों और शब्दों से बच्चे खेलते हैं, जीते हैं और उनसे अपनेपन का एक रिश्ता जोड़ लेते हैं। अगर भाषायी कौशलों सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना के विकास की बात करें तो गीत सहायक सिद्ध होतें है। पढ़ना बल्कि यह कहें कि सीखने की पूरी प्रक्रिया बच्चों के लिए नीरस, थकाऊ और कष्टदायी न होकर रोचक, सरस और आनन्ददायी हो जाती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम बच्चों के मन, उनकी इच्छा-आकांक्षा, सपनों, भावनाओं को समझें। हम यह जानने की कोशिश करें कि वह क्या चाहता है। हम उसको उस तरीके से पढ़ायें जिस तरीके से वह पढ़ना चाहता है, न कि जिस तरीके से हम पढ़ाना चाहते हैं। गीतों का प्रयोग बच्चों को प्रेरित करता है।

वास्तव में गीत शीतल निर्झर की भाँति चरैवेति-चरैवेति का ललित लोक संदेश देते हुए व्यक्ति में सत्साहस, सामर्थ्य, सहनशीलता, सहकारिता, सामूहिकता एवं सर्वमांगल्य के दैवीय भाव जाग्रत करते हैं। आइए, जीवन में गीतों को सहयात्री बना लें, साँसों का साथी बना लें तो हर राह आसान हो जायेगी, जीवन उपवन-सा सौरभमय सुवासित हो जायेगा।

लेखक भाषा शिक्षक एवं शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं। बाँदा, उत्तर प्रदेश

बाल कवि सम्मेलन से भाषा कौशलों का विकास

प्रभावी शिक्षण के लिए विद्यालय में कक्षा में विविध गतिविधियों का आयोजन छात्रों के लिए रुचिकर, आनंददायक व सीखे जा रहे ज्ञान को स्थायित्व प्रदान करने वाला होता है। जहाँ छात्र समूह में अधिक सीखते हैं वहीं शिक्षक के लिए निर्देशन, नियंत्रण व आकलन में सहायता मिलती है। भाषा शिक्षण में गतिविधियों का होना नितांत आवश्यक है। हिंदी का शिक्षण करवाते हुए छात्रों में भाषाई कौशलों के विकास हेतु विविध गतिविधियों के आयोजन का सीधा संबंध न केवल हिंदी भाषा के संरक्षण, संवर्धन करने बल्कि हिंदी को राष्ट्र व वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाने से है। शिक्षा विभाग हरियाणा में कार्यरत अनेक भाषा शिक्षक इस प्रकार की गतिविधियों का आयोजन कर रहे हैं। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नलवा जिला हिसार के हिंदी प्रवक्ता अशोक वशिष्ठ हिंदी शिक्षण में गतिविधियों के माध्यम से हिंदी की विविध विधाओं का परिचय करवाने, भाषाई कौशलों के विकास तथा हिंदी को राष्ट्रभाषा से विश्व भाषा बनाने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ पाँच बार खंड स्तरीय बाल- कवि सम्मेलनों का आयोजन कर चुके हैं। कोरोना काल में विद्यालयों के बंद होने पर भी उन्होंने राज्य स्तरीय ऑनलाइन बाल-कवि सम्मेलन का आयोजन किया। इस वर्ष 12 सितंबर को आयोजित दूसरे राज्य स्तरीय बाल कवि सम्मेलन में प्रदेश के 10 जिलों से 62 प्रतिभागियों ने कविता पाठ किया। पिछले 7 वर्षों से हिंदी सप्ताह या पखवाड़े में भागीदारी करते हुए अनेक छात्रों ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपनी रचनाओं की अभिव्यक्ति की है। सीसवाल विद्यालय के उनके शिष्य प्रदीप व राजेश ने गायक के रूप में पहचान स्थापित कर ली है वहीं पिंकी, ज्योति, विद्या शर्मा, कविता लेखन कर रही हैं। राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय आदमपुर की छात्रा स्मृति 30 से अधिक मौलिक रचनाएँ लिख चुकी हैं तथा अपने कविता पाठ के वीडियो यूट्यूब पर भी प्रसारित करती हैं। प्रवक्ता अशोक वशिष्ठ छात्रों को हिंदी में हस्ताक्षर करने व दैनिक जीवन में हिंदी शब्दों के अधिकाधिक प्रयोग करने को प्रेरित करते रहते हैं तथा दो वर्ष से राज्य स्तरीय ऑनलाइन बाल-कवि सम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं।

बाल कवि सम्मेलन की शुरुआत -

प्रवक्ता अशोक वशिष्ठ ने वर्ष 2014 से विद्यालय स्तर पर हिंदी सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया व इसके समापन पर बाल-कवि सम्मेलन के साथ किया। छात्रों की रुचि, शिक्षकों व अधिकारियों द्वारा मिले सहयोग एवं समर्थन से कार्यक्रम सफल रहा व एक कदम आगे यानी खंड स्तरीय बाल कवि सम्मेलन करवाने को प्रेरित हुआ। अब तक इसके 5 संस्करण स्वयं के खर्चे पर आयोजित हो चुके हैं।

हिंदी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित की जाने वाली गतिविधियाँ-

शब्द अंत्याक्षरी, वर्ग पहेली, व्याकरण प्रतियोगिता, निबंध लेखन, भाषण प्रतियोगिता, संवाद लेखन, कहानी लेखन, दोहा गायन, काव्य पाठ आदि।

खंड स्तरीय कवि सम्मेलन के वर्ग व चरण

खंड स्तरीय कवि सम्मेलन दो वर्गों यानी कक्षा 6 से 8 कनिष्ठ वर्ग, कक्षा 9 से 12 वरिष्ठ वर्ग में आयोजित करवाया जाता है। इसके तीन चरण होते हैं जिसमें पहला चरण कक्षा स्तर का है, दूसरा चरण विद्यालय स्तर का व तीसरा चरण खंड स्तर का होता है।

ऑनलाइन सम्मेलन में 10 जिलों के 62 प्रतिभागी-

इस वर्ष हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित दूसरे राज्य स्तरीय ऑनलाइन बाल-कवि सम्मेलन ने 10 जिलों के 62 बाल कवियों ने अपनी रचनाओं की प्रस्तुति से मन मोह लिया। छात्रों ने हिंदी भाषा, देश भक्ति, प्रकृति सौंदर्य, महिला सशक्तीकरण जैसे विषयों पर आधारित स्वरचित व प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं का पाठ किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रामनिवास मानव रहे। उन्होंने कविता लेखन के लिए आसान व अपने आसपास के विषयों से शुरुआत करते हुए मौलिक कविता लेखन के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एससीईआरटी की विषय विशेषज्ञ तनु भारद्वाज ने की।

-'शिक्षा सारथी' डेस्क

भाषा-शिक्षण में साहित्य की भूमिका

साहित्य के प्रति अनुराग पैदा करता पठन सप्ताह

सुरेश राणा

हम अपने भावों तथा विचारों का सम्प्रेषण भाषा के माध्यम से करते हैं। भाषा केवल विचारों को सम्प्रेषित करने का साधन ही नहीं है, बल्कि यह कल्पना करने, सोच-विचार करने तथा तर्क शक्ति विकसित करने का सशक्त माध्यम है। भाषा के माध्यम से ही हम सबके हृदय में विचार उद्वेलित होते हैं। अतः भाषा पठन पाठन शिक्षण का अभिन्न अंग है।

हँसता-खेलता मुस्काता हुआ बालक विद्यालय में प्रवेश करता है। शिक्षक बालक के विद्यालय में प्रविष्ट होते ही वर्णमाला की घुट्टी पिलाने में जुट जाते हैं। उनका उद्देश्य बस यही रहता है कि बालक को अक्षर ज्ञान हो जाए और वर्णों को जोड़कर शब्द बनाना जान ले तथा भाषा को जल्दी से पढ़ना-लिखना सीख ले। उनका भाषा शिक्षण बस वर्ण, शब्द और वाक्य के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। इस प्रकार सीखने-सिखाने की पद्धति में खो जाता है -अधिगम। बालक को पाठ्य पुस्तक पढ़ने में आनन्द नहीं आता। उसका शिक्षण कक्ष में तनिक मन नहीं लगता, पाठ पढ़ते समय वह बगलें झाँकने लगता है। उसकी वर्ण, शब्द, वाक्य तथा पढ़ाए जा रहे पाठ पढ़ने तथा सीखने में कोई रुचि नहीं होती। उसे शिक्षण उबाऊ लगता है।

अक्सर देखने में आया है कि भाषा शिक्षण केवल पाठ्य-पुस्तक में दिए गए पाठों के इर्द-गिर्द घूमता है। हम विद्यार्थियों को पाठ पढ़ाते हैं, पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताते हैं, अभ्यास में दिए गए प्रश्नोत्तर लिखवाकर उन्हें याद करवाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। हमें यह समझने की जरूत है कि शिक्षण केवल किसी पाठ को पढ़ाना, कठिन शब्दों के अर्थ बताना और इसके बाद पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखवाकर रटवाना भर नहीं है।

भाषा शिक्षण का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है कि विद्यार्थी को इस योग्य बनाया जाए कि वह अपने हृदय में उठने वाले भावों, विचारों को बोलकर या लिखकर अभिव्यक्त कर सके। वह सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना कौशलों में कुशल होकर कल्पनाशीलता तथा सृजनात्मकता में भी पारंगत हो।

बालक जब भी विद्यालय में प्रविष्ट होता है तो उसकी पढ़ाई की शुरुआत साहित्य शिक्षण से होनी चाहिए। वर्णमाला की बजाए बालकों को तुकबन्दी आधारित कविताओं के साथ-साथ कहानियाँ सुनाई जानी चाहिए तथा उन्हें बातचीत के भरपूर अवसर प्रदान करने चाहिए। बालकों से कहानी व कविताएँ सुनी जायें तथा उनमें उन्हें खुद के अनुभव जोड़ते हेतु प्रेरित करना चाहिए। चित्र के आधार पर कहानी निर्माण को बल देना चाहिए। यदि कक्षा में पठन पाठन की शुरुआत इस प्रकार अर्थात् छोटे छोटे साहित्य के साथ की जाए तो शिक्षण प्रभावी और रुचिकर होगा। वहीं साहित्य पढ़ने की रुचि जागृत होगी।

साहित्य भाषा शिक्षण में अपनी महती भूमिका अदा करता है। साहित्य केवल आनन्द ही प्रदान नहीं करता बल्कि यह अपने अनुभवों को व्यवस्थित करने और दूसरों के अनुभवों को गहराई से समझने के मौके प्रदान करता है। साहित्य का रसास्वादन बच्चों को मनोरंजन प्रदान करने के साथ साथ सीखने के अवसर भी प्रदान करता है। कल्पना शक्ति के विकास के साथ-साथ साहित्य बच्चों के सोचने समझने की दृष्टि को व्यापक बनाता है और उन्हें सामाजिक, नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों पर भी सोचने का अवसर देता है। अच्छा साहित्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करता है और एक सुदृढ़ राष्ट्र के

निर्माण में महती भूमिका अदा करता है। यह हमें अपनी गौरवशाली परम्परा से परिचित करवाता है।

साहित्य के प्रति विद्यार्थियों में प्रारम्भ से ही अनुराग उत्पन्न हो तथा पठन कौशल की महत्ता को देखते हुए हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा विद्यार्थियों में पठन कौशल का विकास करने हेतु 14 से 20 नवम्बर 2021 रीडिंग मेला सप्ताह कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। साहित्य पढ़ने के प्रति प्रारम्भिक कक्षाओं से ही बच्चों में लगाव पैदा हो तथा पठन की यह प्रक्रिया ताउम्र चलती रहे। हरियाणा के सभी सरकारी विद्यालयों में चलाए जा रहे इस पठन सप्ताह के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं-

1. प्रत्येक सरकारी विद्यालय में एक पठन कोने यानी रीडिंग कॉर्नर की स्थापना करना।
2. विद्यार्थियों को उनकी आयु व स्तरानुसार पढ़ने हेतु पुस्तकें उपलब्ध करवाना तथा पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना।
3. विद्यालयों में पठन कौशल को विकसित करने के लिए विद्यालय प्रबंधन समिति और अभिभावक-शिक्षक बैठक के सहयोग से सामुदायिक भागीदारी को सुनिश्चित करना।
4. सामुदायिक सहयोग के द्वारा विद्यालय में आस-पास के क्षेत्रों से प्रभावी वक्ताओं को आमंत्रित करना।
5. इसके अतिरिक्त हरियाणा राज्य में गुणात्मक विद्यालयी पठन कौशल को विकासित करने एवं प्रभावशाली बनने हेतु समग्र शिक्षा के माध्यम से विद्यालयों में पुस्तकालयों की स्थापना एवं पुस्तकों की उपलब्धता पर बल देना।

सभी सरकारी विद्यालयों में पठन सप्ताह के अंतर्गत अनेक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। जिनमें अध्यापकों द्वारा बच्चों को उनकी मनपसंद कहानी को हावभाव के साथ सुनाना तथा विद्यार्थियों से उनकी मनपसंद कहानी सुनना शामिल रहा। इसके साथ साथ चित्र आधारित कहानी का निर्माण, कहानी का मंचन तथा कहानी का साँझा पठन गतिविधि आयोजित की गई। सप्ताह के अंतिम दिन विद्यालयों में पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें शिक्षक, अभिभावक तथा समाज के गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। इस अवसर पर बुजुर्गों ने बच्चों के साथ अपने विचार साँझा किए। दादी-नानी तथा वरिष्ठ नागरिकों द्वारा बच्चों को कहानियाँ सुनाई गईं। पठन सप्ताह के अंतर्गत बच्चों द्वारा सृजित कहानियों, कविताओं और चित्रों तथा पुस्तकालय की पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

विद्यालय के पुस्तकालय को समृद्ध बनाने के लिए इसी कड़ी में पुस्तक दान अभियान चलाया गया। अतः हम कह सकते हैं कि भाषा शिक्षण में साहित्य की अहम भूमिका है। साहित्य भाषा को सुदृढ़ करने में अहम भूमिका अदा करता है।

हिंदी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कमालपुर
खंड-कलायत, जिला कैथल, हरियाणा

विद्यालय में जब बच्चा आता है तो बच्चे के बौद्धिक विकास की बात की जाती है। इस बौद्धिक विकास को कैसे किया जाए? आइए इस पर थोड़ा विचार करते हैं। अब मैंने जब विचार करने की बात की है तो इसके लिए (विचार करने के लिए) मुझे भाषा की जरूरत पड़ी। बिना भाषा मैं चिंतन मनन नहीं कर सकता। व्यक्ति बिना विचार के नहीं रह सकता। अध्यात्म में निर्विचार होना बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। बच्चा जब विद्यालय में आता है तो अपने साथ नैसर्गिक विचार शक्ति लेकर आता है। विद्यालय का कर्त्तव्य है कि उसकी विचार शक्ति को प्रदूषित होने से बचाते हुए उस खिलती कली को ऐसी बगिया दे जिसमें वह अपनी कोमल कोंपलों को अच्छे से खिला सके। बच्चे का यदि भाषाई विकास हो गया तो उसका बौद्धिक विकास भी हो गया। बौद्धिक विकास (भाषाई विकास) के लिए उसको क्या ऐसा टूल दिया जाए जिससे वह समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बन सके। मेरे विचार में बच्चे को यदि साहित्य दे दिया जाए तो हम इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। साहित्य पाठक के लिए वैचारिक भोजन उपलब्ध करवाता है जिससे पाठक का बौद्धिक विकास होता है। साहित्य के माध्यम से ही विद्यार्थी अपनी घरेलू भाषा से मानक भाषा की ओर अग्रसर होता है।

मुकेश कुमार
प्राथमिक अध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय, बाढ़ी माजरा
खंड- जगाधरी, जिला- यमुनानगर, हरियाणा

रीडिंग मेला सप्ताह बच्चों के पठन कौशल को विकसित करने के साथ ही झिझक खत्म करके हौसला बढ़ाने का कार्य भी करता है। यदि हम पठन कोने की बात करें तो उनके सामने जब विभिन्न प्रकार की रंगीन पुस्तकों के कवर के अंदर कहानियों का विशाल संसार मिलता है जिसमें बच्चे खुद पढ़कर उन कहानियों का आनंद लेते हैं जो किसी प्रकार की परीक्षा से या पूछे जाने वाले प्रश्नों से दूर होता है। वे अध्यापक द्वारा सुनाई जा रही कहानी को सुनकर आनंद लेते हैं और नए नए अर्थ के साथ-साथ कहानी में आई घटनाओं के बारे में भी सोचते हैं। नैतिक मूल्यों पर आधारित कहानी से बालक के जीवन में बहुत सी नैतिक बाते सीखने और अपनाने को मिलती हैं जिससे देश के लिए उपयोगी नागरिक निर्माण में यह अभियान सहयोगी सिद्ध होता है। चित्र पठन द्वारा बच्चों की कल्पना शक्ति को आकार भी मिलता है। वास्तव में रीडिंग मेला बच्चों के सर्वांगीण विकास में महती भूमिका निभा सकता है।

बोधराज
जेबीटी अध्यापक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला वार्ड-10, पानीपत, हरियाणा

पठन मेला' शिक्षा विभाग की एक अनूठी पहल है। विद्यालय परिवार में 'पठन मेला' छात्रों की पठन-पाठन में रुचि व बौद्धिक विकास में सहायक है। इसके माध्यम से हम बच्चों को किताबों की इंद्रधनुषी दुनियाँ सही ढंग से दिखा सकते हैं। विद्यालय के साथ-साथ समुदाय व समाज को शामिल करने से इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है। पठन- मेले में दादी-नानी की कहानियाँ, पत्र-पत्रिकाएँ, बाल-पत्रिकाएँ, प्रेरक कहानियाँ, समूह वाचन, चित्र पठन के माध्यम से बच्चे साहित्य के विशाल साम्राज्य में प्रवेश करते हैं। पुस्तकालय जैसे स्थान पर बच्चों में ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ अनुशासन की भावना का भी विकास होता है। यथोचित पठन अभ्यास पर ही बालक की समस्त मानसिक और भावात्मक उन्नति आश्रित होती है। पठन मेले के माध्यम से बच्चों में सटीक वाचन शैली उत्पन्न की जा सकती है। चित्र पठन में प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे अपनी बात को प्रभावपूर्ण तरीके से रखकर हर्षित होते हैं। अतः विद्यालयों में पठन कौशल को विकसित करने के लिए प्रिंट समृद्ध वातावरण तैयार करने के लिए प्रत्येक अध्यापक को प्रयासरत रहना चाहिए।

नरेश कुमार
प्राथमिक शिक्षक
राप्रापा सरकपुर
खंड-गुहला, जिला-कैथल, हरियाणा

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व प्यारे विद्यार्थियो! इस शृंखला के अंतर्गत इस माह की कड़ी में प्रस्तुत हैं कुछ और मनोरंजक विज्ञान गतिविधियाँ। ये गतिविधियाँ स्थानीय उपलब्ध साधनों के प्रयोग द्वारा संपन्न की गई हैं। इन गतिविधियों का विद्यार्थियों ने बहुत आनंद लिया व विषय संबंधित बारीकियों को समझा।

1.कागज की गोली क्यों निकली बाहर?

पवन का वेग बढ़ जाने पर वायु दबाव घट जाता है। इस पर आधारित एक विज्ञान गतिविधि करवाई गई। जिसमें एक बड़े मुँह वाली बोतल लेते हैं। उसके मुँह पर कागज की एक छोटी सी गोली बनाकर रख देते हैं। जब बोतल के मुँह से बोतल के अंदर की तरफ फूँक मारते हैं तो वह कागज की गोली बोतल के अंदर जाने की बजाय बाहर की तरफ गिर जाती है। इस एक्टिविटी से बच्चों ने यह जाना कि वायु का वेग बढ़ने पर वायु दबाव किस प्रकार से कम हो जाता है। इस गतिविधि को बच्चों ने करके देखा और बहुत आनंद लिया व सीखा। घर पर जाकर बच्चों ने भिन्न-भिन्न तरीकों से इस गतिविधि को किया व अपने अनुभव सहपाठियों से साझा किये। यह गतिविधि उनके लिए एक विज्ञान खेल बन गयी।

2. रेत, नमक व लौह चूर्ण के मिश्रण को अलग अलग करना-

कक्षा 6 के विद्यार्थियों ने 'पदार्थों का पृथक्करण' पाठ की कोई एक मज़ेदार गतिविधि करवाने के लिए कहा।

मैने कहा कि मैं करवा तो दूँगा लेकिन मुझे कुछ सामान की आवश्यकता पड़ेगी जिसका इंतजाम आपको करना होगा। मैंने ब्लैक-बोर्ड पर सामानों के नाम लिख दिये। विद्यार्थियों ने उनमे से प्लेट, गिलास, रेत व नमक लाकर मेज पर रख दिया। विद्यालय की 'अपर प्राइमरी की किट' में से लौह-चूर्ण व छड़ चुंबक निकाल ली गयी। रेत, लौह-चूर्ण व नमक तीनों को मिक्स करके एक मिश्रण तैयार किया गया। अब विद्यार्थियों के समक्ष एक प्रश्न रखा गया कि इन तीनों को अलग-अलग करना है। विद्यार्थी चकित थे कि अब ये तीनों मिल गए हैं तो अलग-अलग कैसे होंगे? मैंने कहा कि अगर तीनों पदार्थ इस मिश्रण में पहचाने जा रहे हैं तो ये अलग-अलग भी हो जाएँगे। मेरे इस कथन से विद्यार्थियों को कुछ उम्मीद जगी। तभी मैंने अपनी जेब से दंड चुंबक (बार मैगनेट) निकाल कर टेबल पर रख दी। यह देखते ही बच्चों को एकदम से विचार कौंध आया। वे बोले, सर लौह चूर्ण तो चुंबक से अलग किया जा सकता है। तत्काल बच्चों ने लौह चूर्ण को तो चुंबक की सहायता से अलग करके दिखा दिया। अब रही रेत और नमक को अलग करने की बारी। अब विद्यार्थियों ने जब खूब माथापच्ची की तो मैंने उन्हें हिंट दिया कि हम नमक को तो पानी में घोल सकते हैं, परंतु रेत को नहीं। बस उसके बाद तो विद्यार्थियों ने फटाफट पानी के गिलास में बाकी बचे मिश्रण को डाल दिया। जिससे थोड़ी देर बाद नमक तो पानी में घुल गया और रेत नीचे बैठ गई। रेत को निथार कर अलग कर लिया व सुखा लिया। नमक के बचे हुए घोल को धूप में रख दिया गया, वाष्पीकरण से नमक के घोल का पानी भी वाष्पित हो कर समाप्त हो गया। इस प्रकार मिश्रण के तीनों पदार्थ मिश्रण से अलग अलग हो गए। यही प्रयोग विद्यार्थियों ने छुट्टी वाले दिन घर पर भी दोहराया।

3.स्मोक गन : धुएँ के छल्ले बनाना-

स्मोक गन गतिविधि को बच्चों ने बहुत पसंद किया। उन्होंने एक बोतल को पीछे की तरफ से दो-तिहाई काट लिया। अब उन्होंने बोतल की बड़े वाली साइड पर बैलून को चढ़ा कर एक तानित झिल्ली जैसी संरचना बनाकर सेलो टेप से चिपका दिया। धूपबती जला कर बोतल के मुँह को धूपबत्ती के ऊपर रख दिया जिससे बोतल के अंदर धुआँ भर गया। बोतल को उठाकर बोतल की दूसरी तरफ बनाई हुई गुब्बारे की झिल्ली को खींच कर छोड़ा तो क्या देखते हैं कि बोतल के मुँह से बहुत सारे धुएँ के छल्ले बाहर निकलने लगे। एक धुएँ का छल्ला आमतौर

पर तब बनता है जब धुएँ के भंडार को एक झटके के साथ अचानक साफ हवा में किसी बल से इंजेक्ट किया जाता है, खासकर एक माध्यम से उसी माध्यम में। झिल्ली में उत्पन्न कम्पन्न से धुएँ के बाहरी हिस्से मध्य भाग के सापेक्ष स्थिर हवा से धीमा हो जाते हैं (या ओपनिंग मार्ग के किनारों की बनावट) इसको यह विशिष्ट आकृति के छल्ले जैसा प्रवाह पैटर्न प्रदान करता है। विद्यार्थियों ने इसी गतिविधि से विरल माध्यम में तरंग प्रवाह/ तरंग संचरण को भी समझा।

4.भँवर/वर्लपूल/टारनेडो/जल फनल का बनाना-

हमारा विद्यालय आवर्धन नहर से अधिक दूर नहीं है। कभी-कभी बच्चे नहर की तरफ जाते हैं तो नहर के पुल पर खड़े होकर पानी में कीपनुमा संरचना को देखते हैं। जिसमें पानी गोल-गोल घूमता हुआ दिखाई देता है। जिसे लोकल भाषा में वे 'भमीरी' कहते हैं। उस पानी की चपेट में यदि कोई वस्तु घास, लकड़ी आदि आ जाए तो वह भी उस कीपनुमा संरचना से होकर पानी के साथ नीचे चली जाती है। विद्यार्थी इसे कक्षा में बनाकर देखना चाहते थे तो उन्होंने एक दो लीटर की कोल्ड ड्रिंक की खाली बोतल ली और उसमें पानी भरा। बोतल को उल्टा कर उसके मुँह पर अपनी हथेली रखकर बोतल को काफी देर तक गोल-गोल घूमाया और फिर अचानक से मुँह से हथेली हटाकर

पानी छोड़ दिया। थोड़ी देर बाद पानी निकलने के पश्चात् देखा कि नदी, तालाब में बनने वाली भमीरी उसकी बोतल में भी बन चुकी है जो वास्तव में पानी के नीचे फँसी वायु के द्वारा मार्ग बना कर बाहर निकलने के कारण बनती है।

5.गर्म ठंडे पानी से प्लास्टिक बोतल का सिकुड़ना-

पाठ पवन, तूफान एवम चक्रवात पढ़ते समय विद्यार्थी इस पाठ की एक गतिविधि से बहुत प्रेरित हुए। उन्होंने देखा कि यह गतिविधि पाठ में तो एल्युमिनियम की कैन से की जाती है, लेकिन पाठ में उस गतिविधि के साथ यह भी लिखा है कि यह गतिविधि प्लास्टिक की बोतल से भी की जा सकती है। कैन की उपलब्धता न होने के कारण यह गतिविधि प्लास्टिक की बोतल से की गई। उन्होंने एक बोतल में एक तिहाई भाग गर्म खौलता हुआ पानी भरा और कुछ क्षणों बाद उसका ढक्कन बंद कर दिया। अब बोतल के ऊपर ठंडा पानी डाला तो, बोतल सिकुड़ कर आधी जितनी हो गई। ऐसा इसलिए हुआ जब हमने बोतल के अंदर गर्म पानी डाला तो बोतल की हवा हल्की होकर ऊपर उठ गई। बोतल पर ढक्कन लगाने से पहले ही काफी हवा गर्म होकर बोतल से बाहर निकल गई फिर हमने ढक्कन लगा दिया। अब हमने जब बोतल पर ठंडा पानी डाला तो बोतल के अंदर की हवा भी

ठंडी होकर सिकुड़न की अवस्था में आ गई। इस कारण बोतल के अंदर कम दबाव का क्षेत्र बन गया तो बाहरी वायुमण्डलीय यानी उच्च दबाव ने बोतल की दीवारों को भीतर की तरफ पिचका दिया। इस गतिविधि से बच्चों को वायु दबाव डालती है व उच्च दबाव से निम्न दबाव की ओर प्रवाह होना, गर्म होने पर हवा क्यों ऊपर उठ जाती है? यह भी पता लगा व बच्चे तेज हवा चलने, आँधी व तूफान आने के कारणों को और अच्छी तरह से समझ सके।

ईएसएचएम सह विज्ञान संचारक
राउवि शादीपुर, जिला-यमुनानगर, हरियाणा

घर्षण क्या है?

मेरे दीवार की बेरुखी
भी घर्षण है।

तेरे चलने पर
जूतों की सोल
का घिस जाना भी
घर्षण है।

कार चलने पर
टायरों का
गंजा होना
घर्षण है।

वे पूछते
घर्षण दोस्त है,
या दुश्मन?

क्या बताएँ उन्हें
उनका कुर्सी पर
बैठना भी
घर्षण है।

उनका बस
में खड़ा होना भी
घर्षण है।

घर्षण है, घर्षण है
जहाँ दो वस्तु
सम्पर्क में
वहाँ घर्षण है।

खिलाड़ी का दुश्मन
घर्षण है।

मशीनों का दुश्मन
घर्षण है

साँप की चाल में
उसका दोस्त
घर्षण है।

सुनील अरोरा
पीजीटी रसायन विज्ञान
सार्थक स्कूल, सेक्टर-12ए
पंचकूला

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, ज़रूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

राज्य पहचानें

1.गुर्जर प्रांत महान
2.राजपूतों की शान
3.उत्तर में है ज्येष्ठ
4.क्रांतिभूमि से श्रेष्ठ
5.सोना-चंदन खान
6.मसालों से पहचान
7.भारत माँ का शीश
8.देश के बीचोंबीच
9.बसें मराठा-गण
10.जनजाति का गढ़
11.देवस्थान पहाड़ी
12.कोयले का भंडारी
13.हरि ने बाँची गीता
14.जन्मी माता सीता
15.पाँच नदी का राज्य
16.त्रिपुर सुंदरी निवास
17.'रत्न' पुरी वह मनहर
18.'बादल का घर' सुंदर
19.कामाख्या का आँगन
20.जगन्नाथ गृह पावन
21.अरुण रंग का अंचल
22.हिम का ओढ़े आँचल

1- गुजरात 2- राजस्थान 3- उत्तर प्रदेश 4- पश्चिम बंगाल 5- कर्नाटक
6- केरल 7-जम्मू-कश्मीर 8- मध्य प्रदेश 9- महाराष्ट्र 10- छत्तीसगढ़
11-उत्तराखंड 12- झारखंड 13- हरियाणा 14- बिहार 15- पंजाब 16- त्रिपुरा
17- मणिपुर 18- मेघालय 19- असम 20- उड़ीसा 21- अरूणाचल प्रदेश
22- हिमाचल प्रदेश

प्रशांत अग्रवाल,
प्राथमिक विद्यालय डहिया,
बरेली, उप्र

पहेलियाँ

1 बच्चे बूढ़े सब खाते हैं,
करके मंजन कुल्ला।
रस में डूबा रहता हूँ मैं,
कहते हैं - - -।।

2 न फूटी न चटकी हूँ मैं,
समझो नहीं फरेबी।
लेकिन रस है मेरे अंदर,
कहते मुझे - - -।।

3 गोल-गोल कंगन के जैसी,
रस में डूब निकलती।
किन्तु जलेबी समझ न लेना,
कहते इसे - - -।

4 नरम मुलायम रस से पगती,
खाते सब मनचाही।
मैदे से बनती है हरदम,
कहते - - -।।

उत्तर- 1- रसगुल्ला 2- जलेबी 3- इमरती 4- बालूशाही

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव कोमल
व्याख्याता-हिन्दी
अशोक उमा विद्यालय, लहार
जिला-भिंड, मप्र

आलसी टिंकू

टिंकू पाँचवी क्लास का छात्र था। उसका पढ़ने-लिखने में बिल्कुल भी मन नहीं लगता था। इसलिए वह पढ़ाई में बिल्कुल फिसड्डी था। अपने अध्यापकों और साथियों से नज़र बचाकर दूर कहीं खेलने को निकल जाता था। एक दिन टिंकू ने सोचा कि सारे बच्चे तो पढ़ने में पागल हैं, मैं कहीं खेलने के लिए बाहर निकल जाऊँ, तो कितना अच्छा होगा।''

यह सोच कर वह एक बगीचे में पहुँचा। वह एक भँवरे को देखकर उसे बोला- 'आओ हम साथ-साथ खेलते हैं।' यह सुनकर भँवरा बोला-'अरे नहीं भाई, मुझे तो बहुत सा शहद इकठ्ठा करना है, अभी फुर्सत नहीं है मुझे, तुम अकेले ही खेलो।'

इतने में उसे एक चिड़िया दिखाई दी। वह चिड़िया के पास पहुँचा और चिड़िया को बोला-'अरे चिड़िया दीदी, आओ साथ मिलकर खेलते हैं।' चिड़िया बोली-'अरे नहीं, तुम देख नहीं रहे, मैं तिनके इकट्ठे करके अपना घोंसला बनाने में व्यस्त हूँ, तुम्हें कोई काम नहीं है क्या?'

यह सुनकर टिंकू उदास हो गया और कुछ सोचने लगा। इतने में उसे एक कुत्ता दिखाई दिया। वह कुत्ते से बोला-'आओ इस पेड़ के नीचे छाया में बैठकर खेलते हैं। कुत्ते ने कहा-'नहीं-नहीं मुझे मेरे मालिक की रक्षा करनी हैं, मैं तुम्हारे साथ नहीं खेल सकता, तुम जाओ यहाँ से।'

टिंकू पेड़ की गहरी छाया के नीचे जाकर बैठ गया और सोचने लगा कि देखो ये सारे पशु-पक्षी होकर भी अपने-अपने काम में लगे हुए हैं और मैं अपना ध्यान पढ़ाई और अपने काम में न लगाकर इधर-उधर की बातों में उलझा हुआ हूँ। अब टिंकू का विद्यार्थी मन जाग चुका था और वह यह समझ चुका था कि उसे आलस्य छोड़कर, अपनी पढ़ाई में मन लगाना चाहिए। उस दिन के बाद टिंकू खूब मन लगाकर पढ़ने लगा और अपनी कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करके सभी का चहेता बन गया।

शिक्षा- हमें आलस्य को त्यागकर अपने काम में ध्यान देना चाहिए।

नीलम देवी
प्रवक्ता संस्कृत
रावमा विद्यालय, गिगनाऊ
जिला-भिवानी, हरियाणा

कुत्ते जीभ निकालकर क्यों हाँफते हैं?

वास्तव में कुत्ते भी इंसान की तरह वार्म ब्लड वाले जानवर हैं, पर उनकी मुश्किल ये है कि उनके पास स्वेद ग्रंथियाँ नहीं होतीं, जिस कारण उनके शरीर से उस प्रकार से पसीना नहीं निकलता, जैसे हमारे शरीर से निकलता है। यही पसीना हमारे शरीर के तापमान को बना कर रखता है। ये पसीना जब हमारे शरीर से भाप बन कर उड़ता है तो हमारे शरीर से ऊष्मा लेकर उड़ता है जिससे हमें गर्मी से राहत मिलती है, पर कुत्तों में ये स्वेद ग्रंथियाँ नहीं होती, तो वे जीभ से पानी का वाष्पन करवाते है और ठंडक पाते हैं। वैसे भी जब वे अपनी जीभ बाहर निकाल कर हाँफते हैं तो वायु के कारण उन्हें शीतलता महसूस होती है।

सुनील अरोरा
सार्थक स्कूल, सेक्टर 12-ए
पंचकूला

कितना प्यारा होता बचपन

सबसे न्यारा होता बचपन।
घुटनों के बल डोले बचपन,
तुतलाता-सा बोले बचपन।
उँगली पकड़े चलता बचपन,
पलनों में ही पलता बचपन।
नन्हे कदम बढ़ाए बचपन,
सबको बड़ा सुहाए बचपन।
घर-आँगन में घूमे बचपन,
माँ के आँचल झूमे बचपन।
प्यारी-सी किलकारी बचपन,
फूलों की इक क्यारी बचपन।
द्वार सजी रँगोली बचपन,
प्यार भरी-सी बोली बचपन।
दीवारों पर लिखता बचपन,
सीधा-साधा दिखता बचपन।
पढ़ने से कतराता बचपन,
बातों से भरमाता बचपन।
सबसे कुट्टी करता बचपन,
सबकी छुट्टी करता बचपन।
शक्कर-दूध-मलाई बचपन,
टॉफी संग मिठाई बचपन।
सचमुच बड़ा सलोना बचपन,
लगता खेल-खिलौना बचपन।
दादी-नानी वाला बचपन,
मिल दोनों ने पाला बचपन।
बर्तन भाँडे फोड़े बचपन,
बिना थके ही दौड़े बचपन।
जाकर फिर न लौटा बचपन,
कितना प्यारा होता बचपन।

गोविन्द भारद्वाज
प्रधानाचार्य
पितृकृपा, 4/254,
बी-ब्लॉक, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
अजमेर, राजस्थान

शिक्षक व समाज के सामंजस्य की महक बिखेरता सिठाना का सरकारी स्कूल

बोधराज

किसी भी विद्यालय की पहचान उसके मुखिया, शिक्षकों व शिक्षार्थियों की उपलब्धियों से होती है। शिक्षा का अर्थ- बच्चों को चारदीवारी में बैठा कर शिक्षित कर देना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने के साथ-साथ संस्कारित करना भी है, ताकि वे शिक्षा ग्रहण कर योग्य नागरिक बन मजबूत राष्ट्र निर्माण में मजबूत कड़ी बन सकें। कुछ इसी प्रकार से सामूहिक प्रयास किया जा रहा है पानीपत जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिठाना के स्कूल में। जनवरी 2017 में मिडिल स्कूल से वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल में अपग्रेड हुए सिर्फ 4 वर्ष हुए (जिसमें कोरोना काल का लगभग डेढ़ वर्ष का समय भी शामिल है) इस सरकारी स्कूल के शिक्षकों व शिक्षार्थियों के सामूहिक प्रयासों से उड़ान को पंख लग रहे हैं। इस उड़ान के

पंखों को मजबूती देने का श्रेय प्रधानाचार्य सुमेर सिंह को दिया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि उनके करिश्माई नेतृत्व, दृढ़ इच्छाशक्ति व संतुलन बनाकर हौसला बढ़ाने की नेतृत्व क्षमता व मेहनती, नवाचार से परिपूर्ण, समर्पित शिक्षकों की कर्मठता के कारण आज इस विद्यालय की गिनती आम से खास बनने तक के सफर को तय कराने में अहम कड़ी का रोल अदा कर रही है। कोई भी क्षेत्र चाहे शैक्षणिक, सांस्कृतिक, खेलो-इंडिया, लीगल लिटरेसी प्रतियोगिता, विज्ञान-प्रदर्शनी, कल्चरल-फेस्ट, कला-उत्सव, गीता-जयंती, स्काउट-गाइड, सुरक्षा पखवाड़ा, मतदाता जागरूकता, बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ; सभी में इस विद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने अपनी सामंजस्य कला से अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है।

शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम-

यदि हम शैक्षणिक रिकॉर्ड पर नजर दौड़ायें तो सत्र 2019-20 में इस विद्यालय की 12वीं कक्षा का प्रथम सत्र था। जिसमें गुणात्मक रूप से परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा व कई विद्यार्थियों ने मेरिट सूची में स्थान बनाकर अपनी और शिक्षकों की मेहनत को सफल कर दिया। कोरोना काल में भी इस विद्यालय के शिक्षकों की मेहनत का ही परिणाम था कि दसवीं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। जिसका असर यह रहा है कि यहाँ पर छात्र संख्या काफी बढ़ रही है।

कानूनी साक्षरता कार्यक्रम-

लीगल लिटरेसी प्रतियोगिता में विद्यालय के शिक्षकों के मार्गदर्शन में स्कूल के विद्यार्थियों ने खंड स्तर पर हुए कानूनी साक्षरता कार्यक्रम में चारों वर्गों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिला स्तर पर विद्यालय की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया व मंडल स्तर पर करनाल में आयोजित हुई प्रतियोगिता में इसी शानदार प्रदर्शन को दोहराते हुए विद्यालय की टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया जो इस विद्यालय के विद्यार्थियों व शिक्षकों के सामंजस्य को बखूबी दर्शाता है।

जिला स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में विद्यालय के शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यालय के तीन विद्यार्थियों ने भागीदारी की व जिला स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया।

मुख्यमंत्री सौंदर्यकरण प्रतियोगिता -

मुख्यमंत्री सौंदर्यकरण प्रतियोगिता में विद्यालय ने वर्ष 2019-20 में खंड स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया व प्रथम स्थान प्राप्त कर पचास हजार रुपये की राशि इनाम स्वरूप जीती। इस उपलब्धि ने विद्यालय के सामूहिक प्रयासों पर मुहर लगाने का प्रयास किया। इसके लिए पूरी स्कूल प्रबंधन कमेटी, ग्राम पंचायत, सिठाना व पानीपत रिफाइनरी के जन सहयोग को माना जाए तो कोई गलती न होगी।

जनसहयोग से बदलती विद्यालय की तस्वीर-

विद्यालय और समाज एक सिक्के के दो पहलू हैं। इसी के तहत तेलशोधक कारखाना, पानीपत (पानीपत रिफाइनरी) के लगातार सहयोग से विद्यालय में मूलभूत आवश्यकताओं जैसे पानी के लिए सबमर्सिबल पंप की स्थापना, वॉटर कूलर, साफ-सुथरे शौचालय, विद्यार्थियों के लिए स्कूल फर्नीचर, मेडिकल कैंपों का आयोजन, सीमेंट के ब्लॉक लगवाना व 24 घण्टे निर्बाध बिजली के लिए सोलर पैनल की स्थापना करवाना आदि ऐसे कार्य किये गए हैं जिनसे विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने में आसानी हो रही है। साथ ही साथ विद्यालय की रौनक में चार चाँद लग गए हैं । जन सहयोग से विद्यालय की तस्वीर दिन-ब-दिन बदलती जा रही है।

लाडली जन्मोत्सव अभियान-

अक्टूबर 2020 में विद्यालय के द्वारा पानीपत की धरा से शुरू किए गए बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान को मजबूती देने के लिए लाडली जन्मोत्सव मनाया गया जिसमें अक्टूबर माह में जन्मी बेटियों के हाथों माननीय जिला शिक्षा अधिकारी पानीपत रमेश कुमार और खंड शिक्षा अधिकारी मतलौडा, मनीष गुप्ता ने पौधे रोपित करवाये। इस तरह से बेटियों के प्रति समाज की सोच में बदलाव लाने का प्रयास विद्यालय द्वारा किया जा रहा है। इसके लिए पूरा विद्यालय प्रशंसा का पात्र है।

सुरक्षा पखवाड़े का आयोजन-

तेलशोधक कारखाना, पानीपत के सौजन्य से विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार की आपदा से बचने व उसका सामना करने के लिए मार्च 2021 में सुरक्षा पखवाड़े का आयोजन किया जिसमें विद्यार्थियों को घरेलू गैस सिलेंडर के सुरक्षित प्रयोग के बारे व आग लगने के चार मुख्य कारणों व उनसे बचाव के बारे में जागरूक किया गया ।

सीसीटीवी कैमरे-

विद्यालय परिसर और विद्यार्थियों की सुरक्षा के लिए

आठ सीसीटीवी कैमरे स्थापित किये गए हैं। इन सभी का प्रधानाचार्य कक्ष से निरन्तर निरीक्षण किया जाता है। विद्यालय के शैक्षणिक माहौल में और मजबूती आई है।

हर्बल वाटिका मयूर-

जिस प्रकार से मोर के पंख में अनेकों रंगों की छटा होती है उसी प्रकार से इस विद्यालय की हर्बल वाटिका में तुलसी, मरवा, एलोवेरा, लेमन ग्रास, अनेक औषधीय पौधों से वातावरण में महक बनी रहती है। पेड़-पौधों से भरा हुआ ये विद्यालय अपनी सुंदरता से सभी का मन मोह लेता है। साथ ही साथ विद्यालय में रास्तों के साथ-साथ लगी पौधों की बाड़ से रौनक और ज्यादा बढ़ जाती है। स्टाफ सदस्यों के सहयोग से विभिन्न प्रकार के पौधे विद्यालय में निरंतर लगाए जा रहे हैं। सुंदर पार्क, पेड़ों की छाया, हरियाली भरा वातावरण अनायास ही सबका ध्यान अपनी और आकर्षित कर लेता है।

बीट द प्लास्टिक अभियान-

प्लास्टिक का कम से कम प्रयोग हो इसके लिए निरन्तर विद्यालय द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। जिसके लिए अलग से कूड़ेदान रखे गए हैं जिसमे विद्यार्थी प्लास्टिक वेस्ट को डालते हैं ताकि उसका उचित निस्तारण किया जा सके। साथ ही साथ जैविक खाद बनाने के लिए गड्ढों का निर्माण किया गया है जिसमे पौधों के पत्तों, कागज, मिड-डे मील का वेस्ट डालकर खाद निर्माण कर स्कूल में लगे पौधों में डाल कर सदुपयोग कर पर्यावरण संरक्षण का मज़बूत प्रयास किया जा रहा है।

प्रधानाचार्य को थैंक्स बेज अवार्ड -

हरियाणा राज्य भारत स्काउट एवं गाइड के 42 में वार्षिक सम्मान समारोह में स्कूल के प्रधानाचार्य सुमेर सिंह को हरियाणा के राज्यपाल सत्यदेव नारायण आर्य की तरफ से स्काउट एंड गाइड की विभिन्न गतिविधियों में उत्कृष्ट सहयोग के लिए थैंक्स बेज अवार्ड दिया गया। जोकि बखूबी प्रधानाचार्य जी की नेतृत्व क्षमता व सहयोग का मज़बूत प्रमाण है व पूरे जिले के गिने-चुने प्रधानाचार्य में उनकी गणना होने का ये भी एक मजबूत कारण है।

पुस्तकालय की स्थापना-

यदि विद्यार्थियों को भविष्य की प्रतियोगिताओं के

लिए तैयार करना है तो उसके लिए जरूरी है उनकी स्वाध्याय की आदत का निर्माण करना। इसी बिंदु को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में पुस्तकालय की स्थापना की गई जिसमें हजारों पुस्तकें हैं। प्रमोशन रीडिंग वीक के अंतर्गत विद्यार्थी पढ़ने के लिए पुस्तकें घर ले जाते हैं। इस पुस्तकालय में हिंदी, साहित्य, विज्ञान, राजनीति, इतिहास, भूगोल, खेल, कहानियाँ व अन्य विषय से जुड़ी पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनका विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं और भविष्य की प्रतियोगिताओं के लिए तैयारी भी कर रहे हैं। साथ ही साथ अध्यापकों के द्वारा बारहवीं के बाद विभिन्न क्षेत्रों में कैरियर बनाने के लिए मार्गदर्शन किया जाता है।

सुसज्जित कंप्यूटर लैब-

सुसज्जित कंप्यूटर लैब विद्यार्थियों के लिए बहुत ही सहयोगी साबित हो रही है 24 घंटे पावर बैकअप के साथ कंप्यूटर लैब जिसमें विद्यार्थी आधुनिक शिक्षा का पूर्णतया लाभ उठा रहे हैं। समय-समय पर विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट भी विद्यार्थी कंप्यूटर के माध्यम से बना रहे हैं, जिसके कारण विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए बच्चे तैयार हो रहे हैं। साथ ही विद्यालय में विज्ञान लैब में भी विद्यार्थी अपने अध्यापको के मार्गदर्शन में विभिन्न प्रकार के विज्ञान के प्रयोगों को सम्पन्न करते हैं।

> सतपाल सिंह सरपंच ग्राम पंचायत सिठाना का कहना है कि हमारे गाँव का स्कूल अब हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है जिसका सारा श्रेय अध्यापकों की कड़ी मेहनत और समर्पण को है। अब अभिभावकों का झुकाव निजी विद्यालयों से हटकर सरकारी स्कूल की ओर हो रहा है। उनका कहना है कि गुणात्मक व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए उनके स्कूल का कोई मुकाबला नहीं है।
>
> विवेक शर्मा, अधिकारी, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड का कहना है कि विद्यालय और बच्चों के विकास के लिए पानीपत रिफाइनरी का हमेशा सहयोग रहा है । भविष्य में भी ऐसा सहयोग हम देते रहेंगे।

एनएमएमएस व क्विज प्रतियोगिता-

एनएमएमएस में स्कूल के दो विद्यार्थियों ने सफलता पाई है जोकि दर्शा रही है कि आने वाले समय में इनकी संख्या और ज्यादा होने वाली है। साथ ही विभाग द्वारा आयोजित क्विज प्रतियोगिता में 9 से 12 वर्ग में खंड स्तर पर प्रथम व ज़िला स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया जो कि सभी स्टाफ सदस्यों की मेहनत व उनकी विद्यार्थियों के साथ सामूहिक प्रयासों को सफलता में बदलने की कला को खूब सराहा जा रहा है।

विद्यालय के प्रिंसिपल सभी के लिए प्रेरणा-पुंज-

सफलता का श्रेय नेतृत्व को दिया जाए तो शायद कोई भूल नहीं होगी, इसी परंपरा का निर्वहन वर्तमान प्रिंसिपल सुमेर सिंह जी शिक्षकों और शिक्षार्थियों के लिए बखूबी कर रहे हैं एवं प्रेरणा पुंज बनकर कार्य कर रहे हैं। उनको पर्यावरण संरक्षण के लिए नवोदय क्रांति परिवार भारत ने राष्ट्रीय स्तर का पर्यावरण प्रहरी सम्मान से नवाज़ा है। इसके अलावा ज़िला प्रशासन भी इनको ज़िला स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में सम्मानित कर चुका है। शिक्षण कार्यों के लिए हरियाणा सरकार के कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी ने भी प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया है।

एक से गिनती की शुरुआत कर आज सौ तक की सीढ़ी का सफर तय कराने में सिठाना के सरकारी स्कूल के लिए प्रधानाचार्य, स्टाफ सदस्यों का सहयोग, एसएमसी की प्रमुख भागेदारी व जनसहयोग की विशेष भूमिका रही है, जिसके लिए इसके प्रयासों को साधुवाद दिया जाए तो इन प्रयासों को मजबूती देने का कार्य होगा।

जेबीटी अध्यापक
जीपीएस, वार्ड-10,पानीपत, हरियाणा

अब मुझे अंग्रेज़ी से डर नहीं लगता

छोटे बच्चों को अंग्रेज़ी सिखाने के लिए अंग्रेज़ी भाषा को उनकी दिनचर्या में शामिल कीजिए। बच्चों के लिए दिए गए निदेर्शों आदि को अंग्रेज़ी में बोलिए। हो सकता है कि आरंभ में उन्हें समझने में दिक्कत आए, लेकिन शीघ्र ही वे उन्हें सीखने और फिर बोलने में अभ्यस्त हो जाएँगे।

Good morning/ Good afternoon students/the class (शुभ प्रभात/ शुभ दोपहर विद्यार्थियों/कक्षा)

Sit down now Please (कृपया अब आप बैठ जाइए।)

Please come to the board and write the date. (कृपया बोर्ड पर आकर तारीख लिखें।)

Thank you (धन्यवाद)

क्या आपने छोटे बच्चों को टीचर-टीचर खेलते हुए देखा है? शायद यह खेल आपने भी अपने बचपन में खेला होगा। बच्चे शिक्षक की नकल करना पसंद करते हैं। आपके हाव-भाव, आपकी पोशाक, आपके बोलने का तरीका, यहाँ तक कि आप कौन सी बात को कैसे कहते हैं। आप इसका उपयोग भाषा का अभ्यास कराने में कर सकते हैं और यह करना भी चाहिए।

उदाहरण के लिए जब आप स्कूल का समय पूर्ण हो जाने पर हर दिन See you tomorrow कहते हैं, तो छात्र इस वाक्यांश को अपना लेंगे। वे शब्द Tomorrow सीख लेंगे और नए तरीकों से इसका उपयोग करना शुरू कर देंगे।

Tomorrow I go to my village.

Tomorrow we play hockey in game period.

यही भाषा का आकर्षण है।

Do what I say जैसा मैं कहती हूँ/कहता हूँ वैसा करो। आप स्वयं भी ऐसा करें और बाद में एक बच्चे को समूह का शिक्षक बनाकर भाषाई खेल को क्रियान्वित करवा कर खेल-खेल में अंग्रेज़ी भाषा को बड़े रुचिकर तरीके से बच्चों तक पहुँचाएँ।

Make a big circle. (एक बड़ा वृत्त बनाओ)

Everybody hands up. (सभी अपने हाथ ऊपर करो)

Please down your hands. (कृपया अपने हाथ नीचे करें)

One at a time, Please. (कृपया एक बार में एक)

Guess who? (अंदाजा लगाओ कौन?)

कक्षा को दो समूहों में बाँटकर समूहों को आपस में किसी व्यक्ति के व्यवसाय के बारे में जिसमें स्त्रियाँ और पुरुष दोनों ही हो सकते हैं, दूसरे समूह को पहले समूह से प्रश्न पूछकर यह अनुमान लगाना है कि वह कौन व्यक्ति है?

Guess what I saw ? (अंदाज़ा लगाओ मैंने क्या देखा ?)

किसी एक बच्चे को कक्षा से बाहर जाने के लिए कहो और कक्षा के आस-पास जो भी वस्तु है या जो भी घटित हो रहा है उसको जानने को कहो। बाकी कक्षा जो कि एक गोल चक्कर में बैठी है, अपने प्रश्नों से बाहर गए छात्र से पूछने की कोशिश करेगी।

इसी तरह से पूछिए- What did you see? (आपने क्या देखा?)

एक समूह को भी बाहर भेजा जा सकता है। गतिविधियों को एक प्रतिस्पर्धा का रूप दिया जा सकता है, जो खेल को रुचिकर व जिज्ञासु बनाएगा और बच्चों की भाषा शैली का विकास होगा।

Who asked the best question?

Who told the best answer?

जिसने सबसे अच्छा सवाल किया, जवाब बताया, उसे बाहर जाने का मौका मिलेगा। आप देखेंगे खेल-खेल में बच्चे शब्दों का चुनाव, प्रश्नशैली, उत्तर देने का तरीका स्वयं सीखने लगते हैं और उनमें आत्मविश्वास बढ़ता चला जाता है। हम अंग्रेज़ी भाषा का दिन पर दिन उपयोग बढ़ाते जाएँगे। भाषा-शिक्षण एक कला है, अंग्रेज़ी भाषा शिक्षण की रोचक गतिविधियाँ जैसे- कहानी कहना, नाटक आयोजित करना, सवाल जवाब करना, संवाद व बातचीत, शब्दों का खेल, चित्र वर्णन, पाठ्य पुस्तकों का रचनात्मक उपयोग, गीत, कविताएँ आदि अनेक गतिविधियाँ, उन्हें ऐसा रुचिकर व स्वाभाविक माहौल पैदा करेंगी जो उन्हें स्वयं सीखने-सिखाने के लिए प्रेरित करेगा।

जब छात्र स्वतंत्र रूप से प्रश्न पूछने, प्रश्नों के उत्तर देने, अधिक स्पष्ट और सटीक संवाद करना सीख जाते हैं तो वे न केवल अपनी मौखिक व लिखित शब्दावली बढ़ाते हैं अपितु उनमें नया ज्ञान व कौशल भी विकसित होता है।

आओ सभी मिलकर हरियाणा सरकार द्वारा शुरू की गई मुहिम को सार्थक बनाएँ, ताकि हमारे बच्चे आत्मविश्वास से कहें- "We are not afraid of English." अंग्रेज़ी हमारी दोस्त है।

निर्मल गुलिया
अंग्रेज़ी प्राध्यापिका
डाईट मछरौली, जिला- झज्जर, हरियाणा

2021

दिसंबर माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 दिसंबर- विश्व एड्स दिवस
3 दिसंबर- विश्व दिव्यांग दिवस
4 दिसंबर- भारतीय नौसेना दिवस
7 दिसंबर- सशस्त्र सेना झंडा दिवस
8 दिसंबर- गीता जयंती
9 दिसंबर- अन्तरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस
10 दिसंबर- मानव अधिकार दिवस
14 दिसंबर- राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस
16 दिसंबर- विजय दिवस
25 दिसंबर- क्रिसमस दिवस
26 दिसंबर- शहीद ऊधम सिंह जयंती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Miracle of Encouraging Positive Words...

Dr. Himanshu Garg

Words of encouragement are those that foster self-respect, confidence and independence. We all have emotional tanks inside us. The encouraging words fill that tank with power fuel. Encouragement often involves blowing a confidence bubble. Words of encouragement raise one's confidence level and that confidence level works a lot to achieve everything in life. Everyone is doing their best in this world and sometimes, a kindly word of encouragement can help others realize that they're not alone. Moreover, encouragement is a way of recognizing the good in others, and seeking more of it. We all need some encouraging words and inspiration to pull us out of the doldrums and reframe our thoughts. Behind every successful person there is someone who motivates the person with encouraging words.

Once a small child came home from school and gave a paper to his mother. He told her, "Mother, my teacher gave this paper to me and told me only you are to read it. What does it say?" Her eyes welled with tears as she read the letter out loud to her child- "Your son is a genius. This school is too small for him and doesn't have good enough teachers to train him. Please teach him yourself." His mother did just that, until she fell ill and passed away. After many years, he became one of the

greatest inventors of the century. One day he was going through some of her things and found the folded letter under her clothes. This is the letter which his old teacher wrote to his Mother that day. He opened it. The message written on the letter was "Your son is mentally deficient. We cannot let him attend our school anymore. He is expelled." He became emotional after reading it and thought that when one door closes another door opens. That child was Thomas Alva Edison who invented the bulb and brought the whole world from darkness to light. Thomas Alva Edison wrote in his diary: "Thomas Alva Edison was a mentally deficient child whose mother turned him into the genius of the century." The positive words of encouragement of his mother worked miracles for the little child. Some people come in our life as blessings while others as lessons. But the positive words of encouragement work miracles for everyone every time.

When we encourage others, it boosts their self-esteem, enhances their self-confidence, makes them work harder, lifts their spirits and makes them successful in their endeavours. Encouragement goes straight to the heart and is always available. We never know that only one word of encouragement can change a life to what extent.

Challenges and difficulties are a part of life. Who doesn't go through failures, setbacks, and challenges? We all do. Words of encouragement can often help you get out of your rut. Only these words motivate children to pursue their dreams. These words have the power to affect not only children, but also persons of all groups. Words can have a powerful impact on your mindset. A positive word of encouragement can help change someone's entire life.

Asstt. Professor,
Govt. College for Women, Jind.

Wherever I lay my hat... that's my Home

I'm a rough and tough army brat.
I've lost count of the homes I've had.
Transferred and moving every year or two,
More at home in a tree house than room.

From tiny flats to palatial bungalows,
I've seen every housing high and low.
To a tent where we didn't have electricity,
From the jungles, to the heart of the city.

Travelling by special train or luggage in trucks,
No choosing our next home, just trusting our luck.
But never could an Officer question his orders,
Just march immediately, crossing all borders.

From frozen vales of Kashmir and icy Leh-Ladakh,
Across the Deccan Plateau and Western Ghats.
From the arid, dry, dusty desert Thar sands,
To the green humid, North-East & Nagaland.

Yet everywhere though we may roam,
We turned every house into a home.

By Dr. Deviyani Singh

Human Rights:

A Way to Create a Fairer Society for Future Generations

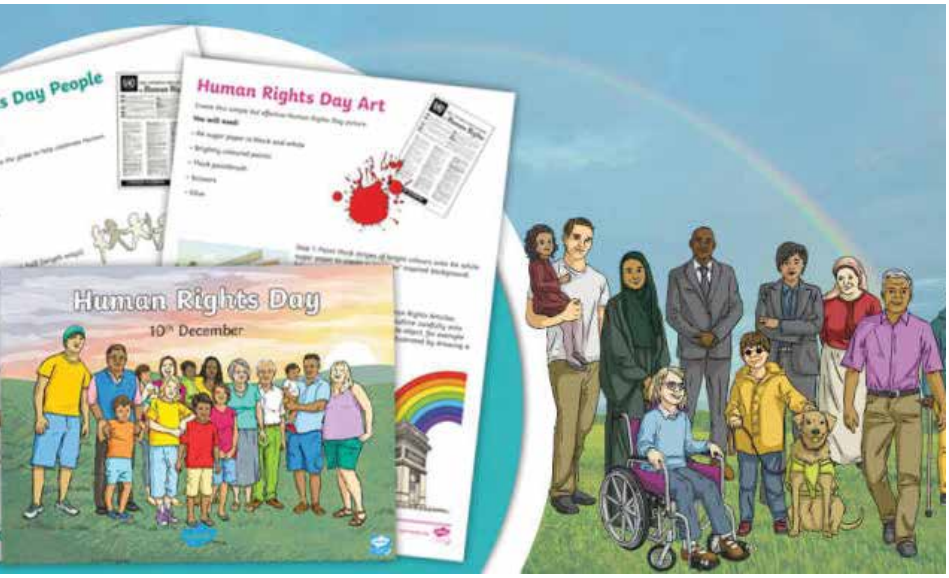

Babita

Human rights are the very essence of being human. These are the norms or moral principles that maintain and safeguard the dignity of an individual. Nelson Mandela, a great fighter for human rights and Nobel Peace Prize Laureate, has rightly said, "To deny people their human rights is to challenge their very humanity."

Without these rights, one cannot think of a successful democracy and a peaceful world. Human rights acquired world-wide recognition when the United Nations General Assembly adopted and proclaimed the Universal Declaration of Human Rights on December 10th, 1948 and declared this day to be observed as Human Rights Day across the world. These rights were then universally protected as fundamental human rights as an evolution of natural rights. The UN Charter refers to human rights in the Preamble and Articles 1, 8, 13, 55, 56, 62, 68, and 76, making these the foundation of freedom, justice, and peace in the world. These rights include the right to life, liberty and security, freedom from slavery and torture, freedom of opinion and expression, the right to work and the right to education, among other rights.

Our country was also an original signatory to the UN charter as well as the International Covenant on Civil and Political Rights. The term "dignity of an individual" finds mention in the preamble of the Indian Constitution. The impact of the Universal Declaration of Human Rights is clearly evident in the fundamental rights enshrined in Part III of the Indian constitution, which guarantees these rights to every individual irrespective of caste, colour, creed or sex.

Human Rights Day is also marked as Nobel Peace Prize Day as the Nobel Peace Prize is awarded on this day to a person or persons for their best work for fraternity between nations and the promotion of peace. This year's prize will be shared by Maria Ressa, a Filipino, and Dmitry Muratov, a Russian, for their outstanding contributions to the protection of human rights to free speech and expression.

Maria Ressa is the first Filipino to receive the Nobel peace prize. She is a journalist and the CEO of Rappler, a social news network in the Philippines. She is an outspoken critic of President Rodrigo Duterte. She has been arrested and convicted wrongfully for her expression of opposition to the unjust killing of drug users and drug dealers in the Philippines.

Despite threats and the killing of six journalists, Dmitry Muratov, editor-in-chief of Novaya Gazeta, refused to abandon the newspaper's independent policy in order to defend journalists' rights to speak out against corruption, unlawful arrests, public violence, and the use of Russian military forces both within and outside Russia. Freedom of the press, speech, and expression is a must for promoting fraternity and disarmament. The role of media and social media as watchdogs is really crucial for protecting and promoting human rights. Human rights must be protected for "the beginning of peace within societies and to pave the way to create a fairer society for future generations," which is the theme of Human Rights Day 2021.

PGT English
GSSS Rewari, Haryana

Creating New Waves in Education- A Holistic Approach

Avinasha Sharma

Abstract

Holistic Education is an approach which focuses on preparing students to meet any challenges they may face in life and in their academic career. The paper tries to find out the principles followed in the holistic approach in education and an understanding of the concept. Holistic education encompasses a wide range of philosophical orientations and pedagogical practices. Its focus is on wholeness, and it attempts to avoid excluding any significant aspects of the human experience. Holistic Education takes contemporary cultural influences such as the media and music and teaches young minds how to be human. It gives clarity to the biggest challenges in life and how to overcome obstacles, accomplish success, and what basic concepts need to be learned initially, in order to accomplish all of those which are kept for us later on in life.

Keywords : Holistic Education, learning, wholeness

Introduction

Holistic education began to take shape as an identifiable field of study and practice in the 1980s in North America (Miller, 2004). It emerged as an answer to the dominant world-

view of mainstream education, often referred to the "mechanistic" or "Cartesian- Newtonian" worldview. Rather than attempting to provide a model of education, holistic education seeks to challenge the fragmented, Reductionist assumptions of mainstream culture and education (Miller, 2000; Shriner & et al, 2005). In other words, holistic education is concerned with "underlying worldviews or paradigms in an attempt to transform the foundations of education (Nakagava, 2001). As Miller (1992), one of the leaders of the movement, argues, Holistic education is not to be defined as a particular method or technique; it must be seen as a paradigm, a set of basic assumptions and principles that can be applied in diverse ways. Martin and Forbes (2004) stressed further by stating that at its most general level, what distinguishes holistic education from other forms of education are its goals, its attention to experiential learning, and the significance that it places on relationships and primary human values within the learning environment.

Holistic Education is a method which focuses on preparing students to meet any challenges they may face in life and in their academic career. The most important theories behind holistic education are learning about oneself, developing healthy relationships and positive social behavior, social and emotional development, resilience, and the ability to view beauty, experience transcendence and truth.

In the ancient times a child used to get adequate support from families, religion, or old tribes which no longer exist. Holistic education seeks to modify learning of human goodness, personal greatness, and the joy of living both in trials and in successes. Pressure from competition in school, after- school activities, and the social pressure to look a certain way, as well as the violence which typically accompanies school children both physically, psychologically, and emotionally, takes away from a child's ability to learn. A child is compelled to perform as per the instructions by the parents or teachers; we are not ready to give the child wings to fly. Holistic education rectifies this. Holistic education notes that children need to not only develop academically, but develop the ability to survive in the modern world. School Social work as a field of Social work profession also gave greater emphasis to make the child competent enough to be productive in the society. They should be able to rise and meet challenges which they confront in the future and contribute to the world in which they live. Lack of coping capacity and positive attitude in life has made children highly vulnerable to end their life even before it blossoms. Indubitably it is the responsibility of the present education system to take care of molding the children to recognize their strengths and to overcome their weaknesses.

This should begin from childhood. Parents and teachers being the first socializing agents should help the children to learn to value themselves, their worth, and recognize their abilities and

how to be able to do what they want in life. Doing what they want ties into the relationships that they build and how they treat those relationships. Holistic education teaches children about their immediate relationships with their friends and family as well as social development, health, and intellectual development. The idea of resilience is a learned quality, not one which is inherent and thus children must be taught to face difficulties in life and overcome them. The child should be taught how to be like a phoenix bird which emerged from ashes and spread melody in the world. This concept inspires children to observe truths, reality, natural beauty, and the meaning of life.

The broad characteristics of Holistic education

1) It nurtures the development of the whole person
2) It revolves around relationships (egalitarian, open, and democratic relationships)
3) It is concerned with life experiences (instead of "basic skills")
4) It "recognizes that cultures are created by people and can be changed by people" (instead of conforming and replicating an established culture)
5) It is founded upon a "deep reverence for life and for the unknown (and never fully knowable) source of life."

Principles of Holistic Education

Holistic education upholds two principles (Miller, 2000)

Learning that connects the person to the world must start with the person—not some abstract image of the human being, but with the unique, living, breathing boy or girl, young man or woman (or mature person, for that matter) who is in the teacher's presence. Each person is a dynamic constellation of experiences, feelings, ideas, dreams, fears, and hopes.

Secondly, we must respond to the learner with an open, inquisitive mind and a sensitive understanding of the world he or she is growing into.

The discourse in holistic education claims that views central to it are not novel but are, in fact, philosophical thoughts that already existed in the society. In fact, the principles and practices of holistic education are already used by a number of institutions. The first principle emphatically mentions that the learning that should connect the person to the world must start in the presence of a person. The second principle states that one should respond to the learner with an open, inquisitive mind and an insightful understanding of the world they are moving into.

Core Qualities of Holistic Education

Joseph (2009) identified the core qualities of holistic education as follows;

There is concern for the interior life, for the feelings, aspirations, ideas and questions that each student brings to the learning process. Contemporary education is no longer viewed as the transmission of information or diffusion of ideas; instead it is an expedition innermost as well as outward into the

world. It helps the children to understand the inner self and to connect to the world.

Holistic education expresses an ecological consciousness; it recognizes that everything in the world exists in context. This involves a deep respect for the veracity of the biosphere, if not a sense of veneration for nature.

It is a worldview that embraces diversity, both natural and cultural. It shuns ideology, categorization, and fixed answers, and instead appreciates the flowing interrelatedness of all life.

It is an education that recognizes the innate potential of every student for intelligent and creative thinking. It is child-honoring education, because it respects the creative impulses at work within the unfolding child as much as, if not more than, the cultural imperatives that conventional schooling seeks to overlay onto the growing personality.

Thus, holistic education is essentially a democratic education, concerned with both individual freedom and social responsibility. It is education for a culture of peace, for sustainability and ecological literacy, and for the development of humanity's inherent morality and spirituality (Cox, 2007).

Martin and Forbes (2004) divide their discussion into two categories: the idea of Ultimacy and Basil Bernstein's (1996) concept of learned Competence.

Ultimacy

1. Spirituality is an important component in holistic education as it emphasizes the connectedness of all living things and emphatically stresses the synchronization between the inner self and outer life.
2. Psychological: As explained by Maslow in the Need Hierarchy theory the self- actualization, holistic education believes that each person should strive to be all that they can be in life. There are no deficits in learners, just differences. It believes in the uniqueness of individuals.
3. Undefined; as in a person developing to the ultimate extent a human could reach and, thus, moving towards the highest aspirations of the human spirit.

Learned competence

1. Freedom (in a psychological sense).
2. Good-judgment (self-governance).
3. Meta learning (each student learns in their own way).
4. Social ability (more than just learning social skills).
5. Refining Values (development of character).
6. Self-Knowledge (emotional development).

Four 'Pillars of Learning' in Holistic Education

For methodological purposes only, holistic education has noted four pillars of learning in the twenty–first century. UNESCO (2004) has also indicated these same four pillars, although with slight differences (Nava, 2001).

Learning to Learn

This starts with learning to ask. The inquisitiveness to know more, and gain more knowledge. To ask is a natural act of consciousness in its search for knowledge. Its real purpose is not so much for the question to be answered as to be explored. It helps in empow-

ering the attributes of consciousness to exercise skills such as concentration, listening, perceiving, and developing curiosity, intuitiveness, and creativity. Learning to learn means having the ability to direct and take responsibility for one's own learning, for keeping oneself up-to-date, for knowing where to look for knowledge. It is particularly to scientific awareness or rather creating a scientific temper. (Nava, 2001).

Learning to Do

In the contemporary system, this means learning to change society through logical, intellectual and responsible action. Learning to do is learning a skill and becoming productive. It also implies learning to adapt to the requirements of work and ability to work in a team, along with strategically using facts to resolve problems and also to make rational decisions in generating quality products and services. It also makes us understand how to take risks as well as take the initiative (Shriner, 2005).

Learning to Live Together

This means learning to live responsibly, respecting and cooperating with other people and, in general, with all the living organisms on the planet. It accepts the uniqueness of every individual. Learning must overcome prejudice, stubbornness, discrimination, authoritarianism and stereotypes, and all that leads to argument, disagreement and war. The fundamental principle of this pillar of learning is interdependence or knowledge of the network of life. (Nava,2001). This pillar implies an education taking two harmonizing paths: on one level, discovery of others and experience of shared purposes throughout life. It implies the development of stupendous qualities such as: knowledge and understanding of self and others, positive reception of the diversity of humanity and an understanding of the similarities and interdependence of all human beings. It enhances the feeling of empathy and cooperative social behavior in caring and sharing. Respect of other people and their cultures and value systems, capability of encountering others and resolving conflicts through dialogue; and competency in working towards common objectives (UNESCO 1996).

Learning to Be

Learning to be means the voyage to find the essence of one which goes beyond the thoughts and action. The universal dimensions of human values rather than individual values are discovered. Holistic education nurtures this learning in a special way, by recognizing the human being as a basically spiritual being in search of meaning (Nava, 2001). "Learning to be" may therefore be interpreted in one way as learning to be human, through acquisition of knowledge, skills and values conducive to the development of personality in its intellectual, moral, cultural and physical dimensions. This implies a curriculum aiming at cultivating and refining qualities of imagination and creativity, acquiring universally shared human values and developing potentials. It enhances aspects of a person's memory, reasoning, aesthetic sense, physical capacity and communication/social skills. It helps in developing critical thinking and exercising independent judgment and developing personal commitment and responsibility (Schreiner2005).

Conclusion

Holistic education is an approach that can meet the needs of all types of learners and that can mould future citizens who will contribute a concern and mindfulness for the society and the planet. Both global education and environmental education, which are also based on the principles of interdepen-

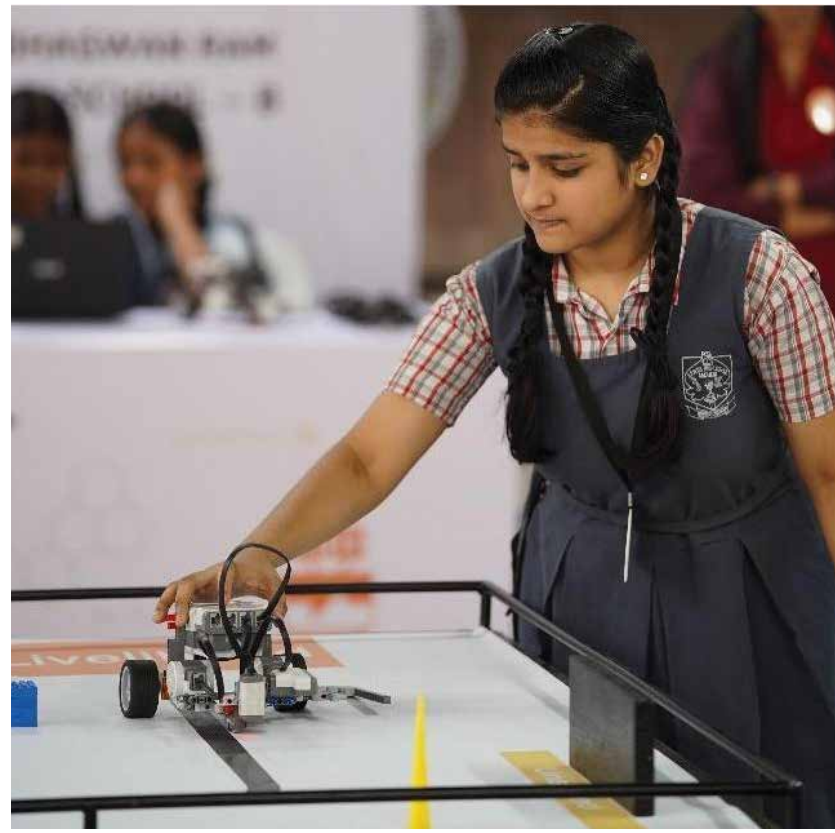

dence and connectedness, are embedded in it. Based on this interdependent perspective, holistic education seeks to create a society where we live in harmony with the ecosystem. It discards consumerism as the dominant approach of being in contemporary society. Instead, it seeks education which is rooted in the fundamental realities of nature and existence. Holistic education seeks to connect the part with the whole. Holistic education calls on us to restore the vision in which the primary goal of Education is sustainability.

References

- Delors, Jacques et al. 1996. Learning: The Treasure Within. Paris: UNESCO
- UNESCO. 2004. EFA Global Monitoring Report. Paris: UNESCO.http://www.ibe.unesco.org/cops/Competencies/PillarsLearningZhou.pdf
- Retrieved on 30/01/2017
- Cox, M. (2007). Access to quality education for children and youth with disabilities in conflict, crisis and stable countries. Background Report. (Unpublished Report). Washington, D.C.: USAID.
- Miller, R. (2000). Creating Learning Communities: Models, Resources, and New Ways of Thinking About Teaching and Learning. Brandon, VT: Holistic Education Press.
- Nacagawa, Y. (2000). Education for Awakening: an Eastern Approach to Holistic education. Brandon, holistic education press.
- Miller, R. (1992). What are schools for: Holistic education in American culture (2nd ed.), Brandon, VT: Holistic Education Press.
- Miller, R. (2004)"Educational Alternatives: A Map of the Territory." Paths of Learning, 20, 20-27. [Online] Available :http://pathsoflearning.org
- Shriner, P., Banev, S., & Oxly,S. (2005). Holistic education Resource Book, verlage: Waxmann
- Forbes, S. (1999). Holistic Education: An Analysis of Its Intellectual Precedents and Nature. Unpublished dissertation, University of Oxford.
- Forbes, S. (2003) Holistic Education: An Analysis of its Ideas and Nature. Brandon, VT: Foundation for Educational Renewal.
- Martin, A. R. and Forbes, S. H. (2004). What Holistic Education Claims About Itself: An Analysis of Holistic Schools
- Literature. Paper presented at the American Education Research Association Annual Conference (San Diego, California, California, April 2004). 26 pages.
- Joseph, R. (2009). Promoting quality education in refugee contexts: Supporting teacher development in northern Nigeria. New York, N.Y.: International Rescue Committee. Retrieved fromhttp://www.healingclassrooms.org/downloads/Promoting_Quality_Education_%20Refugee_Contexts.pdf
- Bernstein, B. (1996). Pedagogy, Symbolic Control, and Identity: Theory, Research, Critique. London: Taylor & Franci
- Nava, R, G. (2001). Holistic education: Pedagogy of universal love. Brandon: Holistic education press.

Lecturer in English
GGSSS No.5 NIT,
Faridabad, Haryana

Compendium of Academic Courses After +2

EVENT MANAGEMENT

Introduction

An Event is a program, function, seminar, exhibition, show, award ceremony, marriage or even family party. The activities and assignments in event management involve event marketing, Costs and Budgets available, advertisements, reviews, demos and post

Eligibility

10+2 with good knowledge of English

Courses

1. Certificate Course in Event Management (CEM)
2. Diploma in Event Management (DEM)
3. Graduate in Management/Event Management
4. Post-Graduate Diploma in Event Management (PGDEM)

Institutes/Universities

1. National Institute of Event Management, Mumbai.
2. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)
3. Indian Institute of Event Management, Mumbai.
4. University of Mumbai, Mumbai.

Practical Training

Most of the institutes offer Students practical training by giving them live projects which include all kinds of small and large events.

HOSPITAL MANAGEMENT

Introduction

Hospital Management is related to various aspects such as purchase of equipment, human resource, and promotion of health services, economic planning, and budget allocation for hospital services.

Eligibility

1. XII pass or equivalent with Biology.
2. For some institutes an MBBS degree is the criteria for admission

and for certain courses a Bachelor's degree (Any stream) is required.
3. Eligibility criteria may vary for different colleges

Institutes/Universities

1. Tata Institute of Social Sciences, Osmanabad, Maharashtra.
2. Birla Institute of Technology and Science, Pilani, Rajasthan.
3. All India Institute of Medical Sciences, New Delhi
4. Punjab University, Chandigarh
5. Tata Institute of Social Sciences, Dept. of Health Services. Mumbai
6. Armed Forces Medical College in Pune
7. Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
8. Nizam Institute of Medical Science in Hyderabad
9. Kasturba Medical College Manipal.
10. Sher-i-Kashmir Institute of Higher Medical Sciences, Jammu and Kashmir
11. Madurai Kamaraj University, Madurai
12. Indian Institute of Social Welfare and Management, Kolkata
13. Distance Education
14. Institute of Health Care Administration, Chennai.
15. Note: There are many other institutes which offer correspondence course in Hospital Management.

HOTEL MANAGEMENT

Introduction

Hotel management involves the study of House- Keeping, Food & Beverage Service, Food Production, Dietetics and Nutrition, Tourism Management, Catering Technology, Accommodation Operations & Management, Culinary Arts and Kitchen Administration (Chef Training), Bartending, front office etc.

Entry & Selection process

As per Govt. of India policy, NCHM joint Entrance Exam 2019 will be conducted by "National Testing Agency" Govt. of India for admission to "3 years 6 semesters B.Sc. (HHA) Program" in more than 63 IHMs (Govt. as well as Private) under the academic umbrella of NCHMCT.

Courses

1. Diploma in Food & Beverages
2. Diploma in Front Office
3. Diploma in House Keeping
4. Diploma in Dietetics and Nutrition
5. Diploma Front Office and Tourism Management
6. Diploma in Teaching of hotel Management
7. Diploma in Hotel Management & Catering Technology
8. Diploma in Culinary Arts and Kitchen Administration (Chef Training).
9. Bachelor in Hotel Management
10. BSc in Hospitality and Hotel Administration
11. BSc Hotel Management
12. MSc in Hospitality Administration
13. PG Diploma in Accommodation Operations & Management

Eligibility

10+2 or equivalent exam for diploma and graduation courses

Training in Hotels as apprentice

Some hotels take candidates as apprentices after 12th and some experience in the hotel industry or after graduation.

Institutes/Universities

1. National Council for Hotel Management and Catering Technology, New Delhi.
2. Delhi Institute of Hotel Management, New Delhi
3. Dr Ambedkar Institute of Hotel Management, Chandigarh
4. Institute of Hotel Management, Catering Technology & Nutrition at Srinagar, Chandigarh, New Delhi, Lucknow, Ahmedabad, Bhopal, Goa, Mumbai, Chennai, Bangalore, Hyderabad, Bhubaneswar, Kolkata, Gwalior.
5. International Institute of Hotel Management at Kolkata
6. Army Institute of Hotel Management and Catering Technology at Bangalore
7. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)

HUMAN RESOURCE MANAGEMENT

Introduction

Human resource management deals with the management of workforce in any organisation. It is responsible for the selection, training, assessment, and rewards of employees, along with ensuring compliance of labour laws.

HR also includes strategies & initiatives like mergers and acquisitions, talent management, succession planning, industrial and labour relations training in Personnel Management, Employee Welfare, and Industrial Relations.

Courses

1. Certificate Courses in Human Resource Management
2. Bachelor of Business Administration in Human Resource Management
3. Master of Business Administration in Human Resource Management

4. Master of Human Resource Development
5. Master of Business Administration in Personnel Administration
6. Post Graduate Program in Human Resource Management Diploma Courses in Human Resource Management
7. Executive Diploma Programme in Human Resource Management

Eligibility

For Graduation

10+2

PG: Three year BA/BBA and an entrance exam such as CMAT/CAT/XAT or ATMA. The duration for this course is 2 years.

Institutes/Universities

1. All IIMs
2. Andhra University, Andhra Pradesh
3. Indian Institute of Social Welfare & Business Management, West Bengal
4. Institute of Management Technology, West Bengal
5. Annamalai University
6. Tamil Nadu University of Delhi, Delhi
7. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)

INSURANCE

Introduction

Insurance assures compensation or reimbursement of loss of ensured life and assets of individual or groups or companies covered under life insurance and general insurance. Life insurance relates to humans lives whereas general insurance covers all the living and non-

living things.

Courses

1. Certificate course on "Compliance, Governance and Risk Management in Insurance"*
2. Executive Diploma in Insurance Management
3. B Com/M.Com/MBA
4. Post Graduate Certificate in Health Insurance
5. Post graduate diploma in insurance marketing.

Eligibility

For Graduation

10+2

For post-graduation/ PG Diploma

Three years Bachelor's Degree or equivalent in any discipline

*Associate/ Fellow Members of Institute of Company Secretaries of India or Associate/ Fellow Members of Insurance Institute of India

Institutes/Universities

1. The Insurance Institute of India , Mumbai
2. University of Bombay, Mumbai.
3. Indira Gandhi National Open University, New Delhi
4. Institute of Actuaries of India, Navi Mumbai
5. The college of Vocational Studies, Delhi University, New Delhi.

LOGISTICS & SUPPLY CHAIN MANAGEMENT

Introduction

Supply chain consists of various activities that take place between the production and distribution of materials. Logistics and supply chain management includes different sections of supply chain management like materials purchase, management of transport, warehousing, packaging and distribution, order processing, inventory management.

Courses

Certificate, Diploma and PG Diploma courses:

1. Certificate course in logistics Management.
2. Diploma in Cargo and Courier Management.
3. Diploma in logistics Management.
4. PG Diploma in logistics and supply chain management
5. These include both class room and distance education programs.

Eligibility

UG:

10+2.

PG:

BA/BBA.

Institutes/Universities

1. National Institute of Export Management, Chennai.
2. Indian Institute of Material Management Bengaluru, Kolkata.
3. Confederation of Indian Industries Institute of logistics.
4. Indian Institute of Management – Indore (PG Diploma)
5. Centre for logistics & Integrated Material Systems, Hyderabad.

MANAGEMENT

Introduction

Management is a vital component of an organization which determines its success or failure to a great extent. There are courses available in Marketing research, Marketing Management, HR management, Finance Management and verticals such as advertising, Operations research analysis.

There are several other specialized areas like Information Technology, Hospitality, Tourism and Pharma Management and more.

Courses

1. BBA/MBA
2. Master of Marketing Research (MMR).
3. Post graduate diploma or degree after finishing graduation.
4. M .Tech, M. Sc and Graduate diploma, for which individual entrance examinations are conducted by the colleges/institutes offering the programmes.
5. Ph. D

Eligibility

10+2, can be entry level qualification for under graduate courses like BBA.

CAT/CMAT/ other entrance Tests organized by various institutes/ Universities/Business Schools after graduation

Institutes/Universities

1. All IIM, Ahmedabad, Bangalore, Calcutta, Kozhikode, Lucknow, Indore
2. Faculty of Management studies, Delhi
3. IIFT Delhi
4. Department of Management Studies, IIT Madras,
5. IIT Roorkee, Kanpur
6. Indian Institute of Management Shillong
7. Shailesh J Mehta School of Management, Indian Institute of Technology, Bombay
8. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)

The Light Within

This year don't wait for things to change,
Be the change in someone's life.
This Holi don't play with colours,
Bring back the colours into someone's life.
This Diwali don't light crackers,
Be the light in someone's life.
And on Christmas don't buy gifts
Be the gift in someone's life.
So when the New Year dawns anew,
The light within will shine in you.

Dr. Deviyani Singh

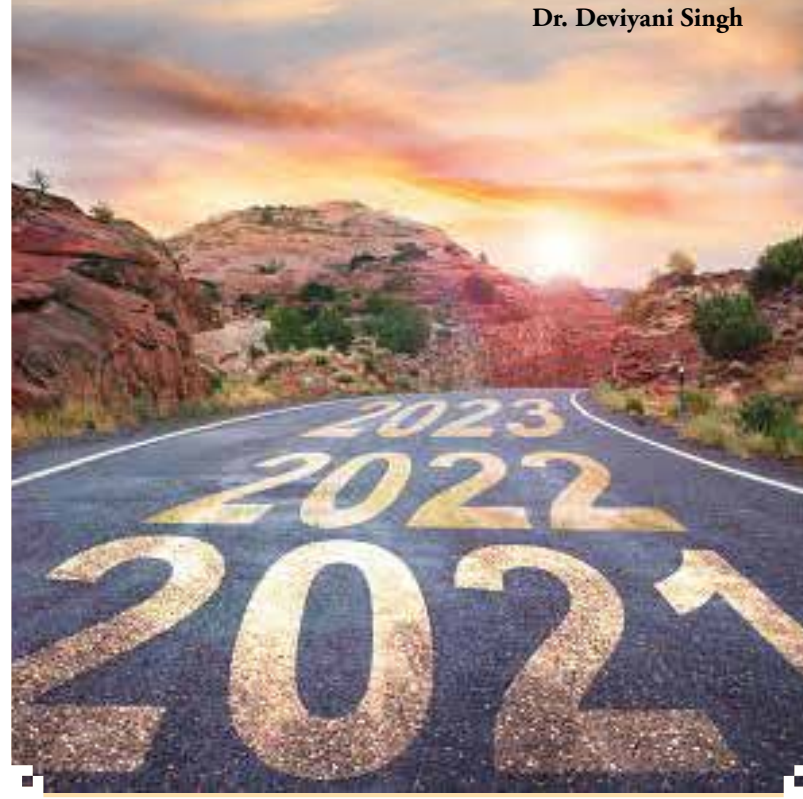

P.I.G.

Dr. Deviyani Singh

P.I.G.s were not a welcome species in our Hostel and I detested them at first. Till due to a twist of circumstances I too was forced to become a P.I.G. for some time.

What's this? You might be wondering? Had I metamorphosized into some shape-shifting being? No, it was P.I.G. an acronym in our Hostel for a 'Permanent Illegal Guest'. This was one type of guest that was not welcome at all but no one could refuse to host them either as they were often close friends in desperate need.

We lived on a sprawling campus with access to all modern facilities and it often became a haven for youth who were not into academics but in Delhi just to check out the job opportunities. So they found a friend with a hostel room and would literally 'pile on' to and stay rent free supposedly till they found a job and place to stay. But the campus life was so liberating and economical, that many refused to leave even after they found jobs.

This was all very well except when the Warden came on a surprise check at midnight much to the chagrin of everyone. The P.I.G.s and the host had a hard time hiding and would find ingenious ways to explain their presence in the hostel at that time of the night including faking a death in the family, accident, robbery or any emergency that caused them to seek help and stay with a friend. Others would try their best to hide or escape. Some tried to foolishly hide behind the door or curtains and were caught by the eagle eyed warden. Others were more innovative and hung out of the balcony or climbed into the neighbour's balcony and jumped

back in after the check was over. This worked till the authorities' wisened up and placed a hefty Chowkidar outside the balconies while checking. So the P.I.G. instead of managing to escape jumped right into the arms of the grinning burly Chowkidar!

If we were caught once or twice we were let off with a fine and warning. However with repeated offences we risked getting rusticated also. Therefore being a host to a PIG was considered a very heroic and sacrificial act of bravado in the student community. The longer the P.I.G. stayed without objection from the host gained him the status of a social worker or almost a martyr for a noble cause. Hence the practice continued unchecked despite the risks.

I finished my Ph.D. from my University and was due to join a new job but had second thoughts and decided to stay on for a little while longer in the Hostel premises. I registered for a foreign language course but could not get Hostel accommodation. Hence I was forced to become a P.I.G. myself. During the day it was easy; we would go to the Mess and buy coupons for a 'thali' by pretending to be a day time visitor only. But we could not go to the same Mess everyday for lunch. To avoid being found out we kept going to

different Hostel Messes, like common thieves.

In the morning for breakfast we had to make do with bread and powder milk. At night we used to go to the local 'dhaba' for an early dinner and have the same oily 'parathas' every time. We did not want to risk entering the hostel too late and being found out.

Being a P.I.G. meant being highly dependent on your host's mercy. In my case, the friend's room I was staying in had gone on long holiday to her home town for 4 months. So during this period I managed to slink in and merge with the rest of the hostellers pretending like it was my room only. But every time somebody knocked on my door past 9 p.m. even if it was to borrow something, my heart skipped a beat. I was eternally grateful for the floor mates who dared to bring up 'thalis' of food for me, from right under the Warden's nose.

My stay as a P.I.G. was brought to an abrupt end as I broke my knee ligaments during my Taekwondo practice. I was so afraid to tell the authorities that I actually limped up to my 3rd floor room with my broken knee, packed my stuff in a bag, got on my Kinetic Honda and drove to a relative's house all by myself. The next morning my leg was cast in a thigh high plaster. After that I had to go home to recover for 3 months while I hobbled about on crutches.

My stay as a P.I.G. will always remain etched in my memory. Our existence was indeed very akin to our animal brethren - scavenging on hostel food, unwanted and hiding from hounds. My sympathies are now with the P.I.G.s that I hated before, for I know now through my experience that they were just victims of circumstances like I once was.

Disclaimer (This work of fiction is based loosely on a true story)

Editor, Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

Amazing Facts

1. **Walt Disney had originally suggested using the name Mortimer Mouse instead of Mickey Mouse.**
2. The only species of turtle that lives in the open ocean is the sea turtle.
3. Toronto was the first city in the world with a computerized traffic signal system.
4. Seniors who drink a cup of coffee before a memory test score higher than those who drink a cup of decaffeinated coffee.
5. Venus is the only planet that rotates clockwise.
6. Some octopuses have been known to eat their arms off when they are exposed to stressful situations.
7. On average, 749 pounds of paper products is used by an American individual annually.
8. The skeleton of a spider is located on the outside of the body. The name for this is exoskeleton.
9. Incas used to create pots in the shape of peanuts that were highly prized.
10. The letter J does not appear anywhere on the periodic table of the elements.
11. Over 200 varieties of watermelons are grown in the U.S.
12. The most dangerous job in the United States is that of a fisherman, followed by logging and then an airline pilot
13. The words "abstemious," and "facetious" both have all the five vowels in them in order
14. French soldiers during World War I had the nickname "poilu" which translates to "hairy one."
15. Former U.S. President William Taft converted the White House stable into a four car garage in 1909.
16. Some snails live on branches in trees.
17. Tomato ketchup is a good conditioner for the hair. It also helps get the greenish tinge that some blonde haired people get after swimming in water with chlorine in it.
18. Did you know you share your birthday with at least 9 other million people in the world?
19. Soldier's disease is a term for morphine addiction. The Civil War produced over 400,000 morphine addicts.
20. The longest freshwater shoreline in the world is located in the state of Michigan.
21. There are bananas called "Red banana" that are maroon to dark purple when ripe.
22. Franklin Pierce was the first U.S. President to have a Christmas tree in the White House.
23. The USA bought Alaska from Russia for 2 cents an acre.
24. The length of brink of the Canadian "Horseshoe" Falls located in Niagara Falls, Ontario, Canada is 2600 feet.
25. The smile is the most frequently used facial expression. A smile can use anywhere from a pair of 5 to 53 facial muscles.
26. The right lung of a human is larger than the left one. This is because of the space and placement of the heart.
27. Native Americans used to use pumpkin seeds for medicine.
28. The pound key (#) on the keyboard is called an octothorpe.
29. The chemical name for caffeine is 1,3,7-trimethylzantihine.
30. Corals take a long time to grow. Some corals only grow one centimeter in one year.

https://greatfacts.com/

1. How many degrees is each angle in an equilateral triangle? **Sixty**
2. What railway line is green on the traditional map of the London Underground (Tube)? **District Line**
3. Keflavik International Airport is in which country? **Iceland**
4. A dibber (or dibble) is used in what: gardening; bingo; brain surgery; or boating? **Gardening**
5. Which politician, buried in Westminster Abbey in 1833, campaigned for more than 50 years against British slavery? **William Wilberforce**
6. Japanese Haiku poetry is generally said to contain how many lines and how many syllables when presented in English? **Three lines and seventeen syllables**
7. Cambridge Late Pine, Redgauntlet and Elsanta are varieties of what fruit? **Strawberry**
8. Who wrote the lines, "Tyger! Tyger! Burning bright, In the forests of the night..."? **William Blake**
9. What word, meaning 'crown' in Latin, refers to a visible electrical discharge and a planetary halo? **Corona**
10. Before 'Poppy Appeal' what words appeared on the central black buttons of poppies sold in Poppy Appeal in the UK every year? **Haig Fund**
11. In the 2010 Formula One motor racing season how many points are awarded to the winning driver of a Grand Prix **25**?
12. What title was shared by three different songs which achieved UK or US number one positions within a few months of each other during 1984-85? **The Power of Love**
13. Who first published and popularised the stories Snow White, Cinderella, Rumpelstiltskin, Rapunzel, Sleeping Beauty and Red Riding Hood? **The Brothers Grimm**
14. What creature is a pismire? **Ant**
15. What is the square root of two-hundred and eighty-nine ? **Seventeen**
16. Yukon and Nunavut are Federal Territories of which country? **Canada**
17. What is the traditional name for a spot on a domino? **Pip**
18. A dibber (or dibble is used in what: gardening; bingo; brain surgery; or boating? **Gardening**
19. What word for a wild or half-tamed horse derives from the Spanish word for rough wood and specifically a knot in wood? **Bronco**
20. ICO - the UK agency responsible for data protection, privacy and freedom of information - stands for what? **Information Commissioner's Office**
21. Who against huge odds knocked defending champion John Higgins out of the 2010 World Snooker Championship? **Steve Davis**
22. Which footballer scored all of England's five goals in their 1975 5-0 defeat of Cyprus? **Malcolm MacDonald**
23. What name, adapted from the male term, refers to a female tree-feller, popularised in Britain during World War II? **Lumberjill**
24. In what European city is the historic port of Piraeus? **Athens**
25. Nicholas Briggs is the long-time voice of which TV evil force? **The Daleks**
26. In Charles Kingsley's 1863 novel The Water-Babies, addressing child labour and Victorian morality, what is the boy Tom's occupation? **Chimney sweep**
27. The Roman numerals DCLXVI equate to what number? **666**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-65-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय!

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का पिछले माह का अंक पढ़ने का अवसर मिला। मुखपृष्ठ पर यूनम पीक फतह करने वाले स्कूली विद्यार्थियों का चित्र देखकर मन प्रसन्न हो गया। भीतर के पन्नों को देखने से पता चला कि पूरा अंक ही पर्वतारोहण विशेषांक है, जिसमें विभाग द्वारा 2016 से अब तक आयोजित पर्वतारोहण कार्यक्रमों की विशद व रोचक जानकारी प्रदान की गई थी। यह जानकर अच्छा लगा कि ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन में हरियाणा प्रदेश देश में सबसे आगे है। विभाग विगत पाँच वर्षों में सैनिक स्कूल कुंजपुरा तथा नेशनल एडवैंचर क्लब के सहयोग से अब तक छह पर्वतारोहण अभियानों का सफलतापूर्वक आयोजन कर चुका है। 'रज्जी और माफी ने भी फतह की यूनम पीक' लेख विशेष तौर पर पसंद आया। धन्यवाद।

अरुण कुमार
लिपिक
निदेशालय मौलिक शिक्षा हरियाणा, पंचकूला

आदरणीय संपादक जी!

नमस्कार।

पत्रिका का गतांक पर्वतारोहण विशेषांक था। पत्रिका पढ़कर विभाग द्वारा आयोजित पर्वतारोहण अभियानों की विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। सचमुच ये अभियान राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए किसी वरदान से कम नहीं हैं। विद्यार्थियों ने अपने अनुभवों में कहा है कि उन्होंने तो इससे पूर्व किसी पर्वतीय स्थल को नहीं देखा था। हिमाच्छादित चोटियाँ तो उन्होंने कुछ फिल्मों में ही देखी थीं। यह अभियान उनके लिए किसी सपने के साकार होने जैसा है। दिव्यांगों का हौसला और जुनून मन को छू गया। 'बाल सारथी' हमेशा की तरह मनोरंजन व ज्ञान की सामग्री से भरपूर था। सचमुच यह एक संग्रहणीय अंक बन गया है। 'शिक्षा सारथी' की पूरी टीम को साधुवाद।

मुकेश कुमार
प्राथमिक अध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय, बाढ़ी माजरा
खंड- जगाधरी, जिला- यमुनानगर, हरियाणा

तरुवर-सम जीवन

पल्लव पुष्पों से सजे धरा, सुरभियुक्त आँगन होगा।
रंगों से नयनों का संगम, हृदय तलक पावन होगा।
श्वास-श्वास में मधुबन घुलकर, मन को अति हर्षाएगा;
रिश्तों से शीतलता का फिर, मनहर आलिंगन होगा।

तरुवर सम जीवन हम करके, संस्कारों का पान करें।
देना सीखें लेना भूलें, मानव हैं तो ध्यान करें।
चार दिशाओं की हरियाली, स्वर्ग धरा दर्शाएगी;
रोग दोष से बचना है तो, भुला स्वार्थ को आन करें।

जड़-चेतन की समझ करें हम, जीवन हितकारी होगा।
भौतिकता में रहे भागते, हरपल फिर भारी होगा।
बंजर भू सम मन हम लेकर, चैन नहीं पल पाएँगे;
चैन बिना ये जीवन 'प्रीतम', दुखों की पारी होगा।

पेड़ लगाओ रोग भगाओ, सीख लीजिये प्यारी-सी।
डेंगू कोरोना की समझो, रीत लगे फिर हारी-सी।
स्वच्छ निरोगी काया होगी, सावन खुद हो जाएँगे;
जीत प्रेम की हँसके होगी, कण-कण में फिर जारी-सी।

मानव हैं हम प्रकृति प्रेम को, हँसके नित-नित समझेंगे।
नहीं समझ में आया कुछ तो, बने निशाचर घूमेंगे।
निशिवासर हमको हँसना है, स्नेह-धरा का हम जानें;
सर्व-धर्म को नूतन करके, आनंद घना चूमेंगे।

पैसे से तो वस्तु मिलेगी, संस्कारों से ख़ुशियाँ हों।
मैल बहाया हमने फिर तो, दूषित जग की नदियाँ हों।
जल पानी सम हो जायेगा, बीमारी हम पाएँगे;
रोग लिए पैसे फिर ऐसे, बीती जैसे सदियाँ हों।

राधेयश्याम 'प्रीतम'
प्रवक्ता हिंदी
रावमा विद्यालय किरावड़, भिवानी, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114